मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

वर्ष-१६, अंक-०४ जुलाई २०२६ मुम्बई सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ३६ मूल्य १००.०० रूपए

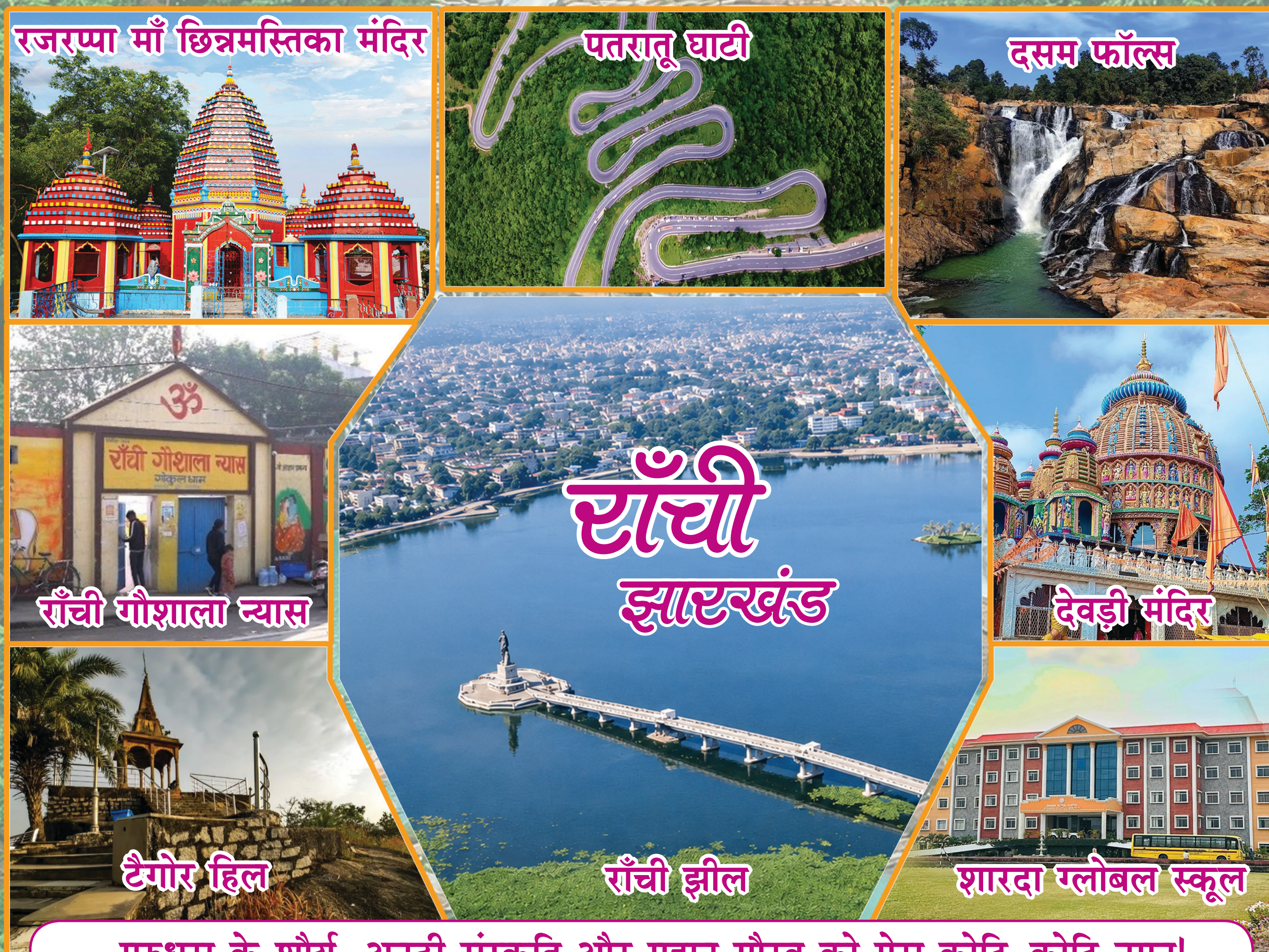

मरुधरा के शौर्य, अनूठी संस्कृति और महान गौरव को मेरा कोटि-कोटि नमन!
'मैं भारत हूँ' पत्रिका के राँची विशेषांक के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ।
झारखंड की पावन धरा और राँची की प्रगतिशीलता को
समर्पित यह प्रयास सराहनीय है, ईश्वर से कामना है कि
यह विशेषांक सफलता के नए आयाम गढ़े और मार्गदर्शक बने।

डॉ. चन्द्रेश बजाज
रमादा बाय विन्धम, फाइव स्टार होटल, रांची, झारखंड, भारत
मो: ९२४१८२५९६१

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

जरूर देखें : http://www.mainbharathun.co.in

भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं

२८ जून २०२६

कोलकाता के धनोधान्य ऑडिटोरियम में 'भारतीय सांस्कृतिक समागम-भारतम्' का भव्य आयोजन

।। माँ भारती की जय जय जय ।।

लाल सुरंगी मेहंदी थारे हाथा राचे लाल धाम है झुंझुनू दादी थारो,
मंदिर बन्यो विशाल सिंह पर बैठा दादीजी न सेवक निरखें......

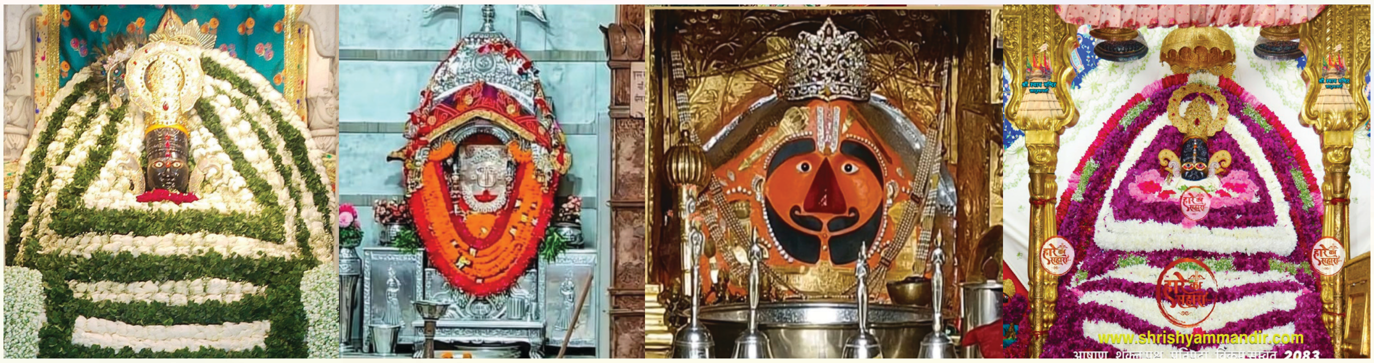

झारखंड के मूलवासी

हमारे पितामह स्मृतिशेष श्रेष्ठी **भोलाराम जी नारसरिया**
(संस्थापको में एक होगा श्री राणी सती मंदिर, रांची)
(संस्थापको में एक होगा मारवाड़ी सहायक समिति, रांची)
हमारे पूज्य पिताश्री स्मृतिशेष श्रेष्ठी **सांवरमल जी नारसरिया**
(पूर्व मंत्री, श्री राणी सती मंदिर, रांची)

एक प्रकाश पुंज

जिसका निर्मल आशीर्वाद एवं अलौकिक स्नेह
सदैव हमारे जीवन पथ को आलोकित
करता रहता है।

पुण्य स्मृति में नतमस्तक

प्रभु दयाल नारसरिया — विश्वनाथ नारसरिया
रेखा नारसरिया — डॉ उषा नारसरिया
डॉ प्रवीण नारसरिया — डॉ श्रुति नारसरिया
अधिवक्ता श्याम नारसरिया — अधिवक्ता जिज्ञासा नारसरिया
सीए राधिका नारसरिया, माधव, माधवी नारसरिया

नारसरिया भवन, रणधीर प्रसाद स्ट्रीट, अपार बाज़ार, राँची, झारखण्ड, भारत-८३४००१

१० आदिवासी संस्कृति की पहचान, स्वतंत्रता संग्राम की जान,
वीरों की इस भूमि का नाम है, हमारा प्यारा रांची शहर महान।

BIMAL DASSANI **VIVEK DASSANI**

JAIN SYNTHETICS

Deals in
All Kinds of Shirting, SuitingsSarees, Lehenga, Rubia, Poplin,
Dhoti& All Kind of Fancy Fabrics

Ground Floor, Sharma Market,Gandhi Chowk, Upper Bazar, Ranchi, Jharkhand, Bharat
Mob: 8757237802, 9308833306, jainsyntheticsranchi@gmail.com

'मैं भारत हूँ' पत्रिका का आगामी विशेषांक

कानपुर

अगस्त २०२६

कानपुर: भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के 'कानपुर' नगर ज़िले में स्थित एक औद्योगिक महानगर है, यह नगर गंगा नदी के दक्षिण तट पर बसा हुआ है। प्रदेश की राजधानी लखनऊ से ८० किलोमीटर पश्चिम स्थित यहाँ नगर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी के नाम से भी जाना जाता है, ऐतिहासिक और

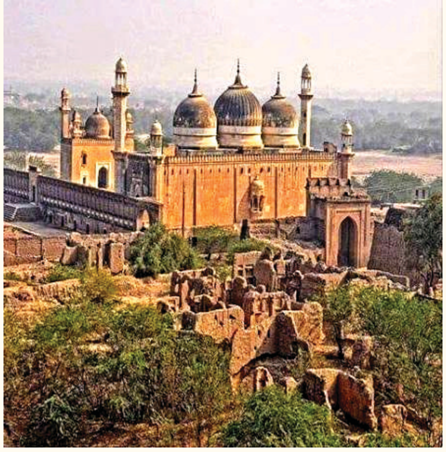

पौराणिक मान्यताओं के लिए चर्चित ब्रह्मावर्त (बिठूर) के उत्तर मध्य में स्थित ध्रुवटीला त्याग और तपस्या का सन्देश देता है।

'कानपुर' न सिर्फ उत्तर प्रदेश का एक औद्योगिक नगर है, बल्कि यह आधुनिक भारत की तकनीकी और सामाजिक गतिविधियों का भी एक महत्वपूर्ण केंद्र बनता जा रहा है और भी बहुत कुछ...

१७ वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

वर्ष -१६, अंक ०४, जुलाई २०२६

वार्षिक मुल्य
रु.१२००/-
१२ अंकों का

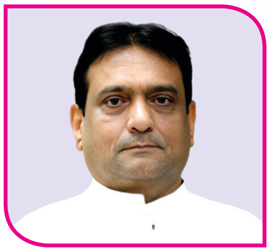

बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए
का आव्हान करने वाला भारत माँ का लाडला

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: 9702205252
डॉ. अल्पना गंगवाल जैन
मो: 9369253113

- 'मैं भारत हूँ' में प्रकाशित लेखों/ कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्ण सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'मैं भारत हूँ' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र,
भारत - ४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
UPI No:- 9322307908
अन्तरताना:- www.mainbharathun.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान
नीचे दिये गए बैंकों में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

सम्पादकीय ....

मेरा भारत क्या इतना...?

जब मैं छोटा था, अपने दोस्तों से, अपने प्रियजनों से, अपने अभिभावकों से, अपने वरिष्ट पूजनीयों से सुनता था कि विदेश की धरती बहुत ही सुंदर है, जब मैं बड़ा हुआ तो दिलों दिमाग में एक ही बात थी कि मैं भी विदेश जाऊं, देखूं कि क्या विदेश की धरती, भारत की धरती से ज्यादा सुंदर है?

...जब मैं पत्रकार बना, लोगों से संपर्क होना शुरू हुआ, अलग-अलग गांव व देश के इतिहास को लिखना शुरू किया, कह सकता हूं कि विदेश के हर राष्ट्र की धरती से मेरा भारत, हम सबका भारत अति सुंदर, प्राकृतिकता की धरोहर है, क्या नहीं है मेरे और आपके भारत में...! भारत का ही एक राज्य झारखंड की राजधानी 'रांची' की बात करें, 'रांची' के लोगों के साथ संपर्क हुआ, 'रांची' के निवासियों ने मुझे बताया कि क्या आपको पता है 'रांची' में पहाड़ हैं, झरने हैं, नदियां हैं, प्राकृतिक सौंदर्यता है, हर चीजों से भरा पड़ा है 'रांची'। लोगों के बीच आत्मीयता है, मृदुलता है, तो सच में ऐसा लगा कि 'भारत' की धरती तो विश्व की धरती से ज्यादा सुंदर है, हर उन चीजों से लबालब है, जिसकी मानव को जरूरत होती है, इंसानियत को जरूरत होती है। प्रस्तुत अंक 'रांची' के संक्षिप्त इतिहास के साथ प्रकाशित किया गया है, 'मैं भारत हूं' पत्रिका के प्रबुद्ध पाठकों को कैसा लगा? मार्गदर्शन करेंगे तो आगामी अंक और भी पठनीय होंगे।

२८ जून २०२६ को पश्चिम बंगाल की राजधानी 'कोलकाता' के विशाल सभागार 'धनोधान्य' में भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ, 'कोलकाता' के हर नागरिकों ने कहा कि हमें गर्व है, हम भारतीय हैं। 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' **INDIA** नहीं, अभियान की सफलता के लिए 'मैं भारत हूं फाउंडेशन' परिवार अहिल्या नगरी 'इंदौर' में २ अगस्त २०२६ को 'लाभ मंडपम' सभागर में भव्य कार्यक्रम करने जा रहा है, जिस प्रकार पूर्व में मुंबई, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पुणे, रांची, गुवाहाटी आदि-आदि 'भारत' के राज्यों की राजधानी में कार्यक्रम कर सफलता पाई और लोगों के विचार पूछे, हर किसी ने कहा कि अब हमारे देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, हम अपने देश को **INDIA** क्यों बोलें? **INDIA** नाम तो गुलामी का प्रतीक है। आज हमारे 'भारत' के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भी कहने लगे हैं, कि **PRIME MINISTER OF BHARAT, GOVERNMENT OF BHARAT**।

विश्वास दिलाता हूं कि यदि आप सबका सहयोग व मार्गदर्शन मुझे मिलता रहा तो एक दिन विश्व के मानचित्र में, जहां अपने देश का नाम केवल **INDIA** लिखा हुआ है वहां पर **BHARAT** लिखवा कर रहूंगा, साथ ही हम सबकी गौमाता को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान 'भारत' में दिलवाकर रहूंगा, बस आप सबका साथ, सहयोग, मार्गदर्शन चाहिए। जय गौमाता! जय भारत!

SBI BANK
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को केवल भारत कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

कोलकाता ही नहीं पश्चिम बंगाल के इतिहास में प्रथम बार 'भारतीय सांस्कृतिक समागम-भारतम्' का आयोजन

कोलकाताः 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के तत्वावधान में २८ जून को कोलकाता अलीपुर स्थित धन्यधान्यो ऑडिटोरियम में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रभक्ति और सामाजिक समरसता को समर्पित एक भव्य कार्यक्रम 'भारतीय सांस्कृतिक समागम-भारतम्' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य संकल्प 'भारत को इंडिया नहीं, भारत कहा जाए' तथा 'गौमाता को राष्ट्रमाता का सम्मान मिले' रहा, इस भव्य आयोजन में कोलकाता सहित पश्चिम बंगाल के मारवाड़ी समाज की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों और हजारों लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के माध्यम से देशभर में 'भारत को भारत कहें' राष्ट्रीय संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया गया, साथ ही समाज में प्यार बढ़े, व्यवहार बढ़े और व्यापार बढ़े का संदेश भी दिया गया। 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन मुंबई, राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुशीला पुगलिया, राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री रवि जैन, राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री वर्षा मूँधड़ा, अंतर्राष्ट्रीय संयोजक अरूण मूँधड़ा व अन्य पदाधिकारियों की भी उपस्थिति रही। आयोजकों के अनुसार, कोलकाता के इतिहास में पहली बार इतने व्यापक स्तर पर भारतीय संस्कृति, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विरासत को समर्पित इस प्रकार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति, इतिहास, आध्यात्मिकता और राष्ट्र गौरव पर आधारित एवं आकर्षक नृत्य नाटिकाओं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में विक्रम समय की धारा में अडिग हमारी परंपरा, विचारों की स्वतंत्रता एवं भारत गौरव का अभिनंदन, महर्षि दधीचि के त्याग, तपस्या और बलिदान, राजस्थान की धड़कन घूमर, श्री अजमेढ़ देवजी महाराज की वीरगाथा, शिव आराधना, सेवा भाव और संस्कार, गौमाता बने राष्ट्रमाता, राजस्थानी लोक संस्कृति, तथा जहाँ समानता, वहाँ समृद्धि-महाराजा अग्रसेन जी का संदेश जैसी प्रस्तुतियों ने दर्शकों को भारतीय सांस्कृतिक विरासत से रूबरू कराया। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण तीर्थंकर महावीर के जियो और जीने दो के संदेश पर आधारित प्रस्तुति रही, जिसमें आधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और महावीर इंटेलिजेंस के बीच के अंतर को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया, इसके अलावा एक कदम भारत के नाम, हर धड़कन राष्ट्र के संग' विषय पर प्रस्तुति दी गई। बिड़ला हाई स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी दर्शकों ने खूब सराहा। सरावगी उद्योग, मंतुराम, कंस्ट्रक्शन्स, गुरुजी ठंडाई, लीड स्टोन ग्रुप, जीवो जतन जन कल्याण ट्रस्ट, सीकर नागरिक परिषद, श्री दाधीच परिषद कोलकाता, कोरोना स्टील इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, नीमकाथाना अचल नागरिक संघ, श्री विशुद्धनंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, टमकोर परिषद, रतनगढ़ नागरिक परिषद, नवलगढ़ नागरिक समिति, गंगाशहर नागरिक परिषद, सन्मार्ग, अहिंसा क्रांति न्यूज, सहित अनेक संस्थाओं एवं मीडिया साझेदारों का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

-जिनागम

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

राँची

'राँची' भारत का ही एक राज्य झारखण्ड राज्य की राजधानी है और राज्य के 'राँची' ज़िले का मुख्यालय है।

'राँची' को झरनों का शहर भी कहा जाता है, पहले जब यह बिहार राज्य का भाग था तब गर्मियों में अपने अपेक्षाकृत ठंडे मौसम के कारण प्रदेश की राजधानी हुआ करती थी। झारखंड आंदोलन के दौरान 'राँची' इसका केन्द्र हुआ करता था, 'राँची' एक प्रमुख औद्योगिक केन्द्र भी है, जहाँ मुख्य रूप से एच ई सी (हेवी इंजिनियरिंग कारपोरेशन) भारतीय इस्पात प्राधिकरण, एकयुप्रेशर काउंसिल की इकाई, मेकन इत्यादि के कारखाने हैं। 'राँची' के साथ साथ जमशेदपुर और बोकारो इस प्रांत के दो अन्य प्रमुख औद्योगिक केन्द्र हैं। 'राँची' को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्मार्ट सिटीज मिशन के अन्तर्गत एक स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित किये जाने वाले सौ भारतीय शहरों में से एक के रूप में चुना गया है। 'राँची' भारतीय क्रिकेट कप्तान महेंद्र सिंह धोनी का गृहनगर होने के लिए भी प्रसिद्ध है।

झारखंड की राजधानी 'राँची' में प्रकृति ने अपने सौंदर्य को खुलकर लुटाया है। प्राकृतिक सुन्दरता के अलावा राँची ने अपने खूबसूरत पर्यटक स्थलों के दम पर विश्व के पर्यटक मानचित्र पर भी पुख्ता पहचान बनाई है। गोंडा हिल और रॉक गार्डन, मछली घर, बिरसा जैविक उद्यान, टैगोर हिल, मैक क्लुस्किगंज और आदिवासी संग्राहलय इसके प्रमुख पर्यटक स्थल हैं, इन पर्यटक स्थलों की सैर करने के अलावा यहां पर प्रकृति की बहुमूल्य देन झरनों के पास बेहतरीन पिकनिक भी मना सकते हैं। 'राँची' के झरनों में पांच गाघ झरना सबसे खूबसूरत है क्योंकि यह पांच धाराओं में गिरता है, यह झरने और पर्यटक स्थल मिलकर 'राँची' को पर्यटन का स्वर्ग बनाते हैं और पर्यटक शानदार छुट्टियां बिताने के लिए हर वर्ष यहां आते हैं।

भूगोल

राँची कर्क रेखा के पास है, इसकी नगरपालिका क्षेत्र ६५२.०२ क्मी२ (२५२ वर्ग मील) है और इसकी औसत ऊंचाई समुद्र तल से ६५१ मीटर है। 'राँची' छोटा नागपुर पठार के दक्षिणी भाग में स्थित है, जो दक्कन पठार का पूर्वी भाग है। 'राँची' की एक पहाड़ी स्थलाकृति और इसके घने उष्णकटिबंधीय जंगलों का एक संयोजन है जो राज्य के बाकी हिस्सों की अपेक्षा अपेक्षाकृत मध्यम जलवायु का उत्पादन करता है, हालांकि अनियंत्रित वनों की कटाई और शहर के विकास के कारण औसत तापमान में वृद्धि हुई है।

जलवायु

हालांकि 'राँची' में एक आर्द्र उप-उष्णकटिबंधीय जलवायु है, इसके स्थान और इसके आस-पास के जंगलों को असामान्य रूप से सुखद माहौल बनाने के लिए गठबंधन है, जिसके लिए यह ज्ञात है। ग्रीष्मकालीन तापमान २० डिग्री सेल्सियस से लेकर ४२ डिग्री तक, सर्दियों के तापमान ० डिग्री से २५ डिग्री तक हो सकते हैं। दिसंबर और जनवरी के सबसे अच्छे महीने हैं, कुछ क्षेत्रों में ठंड के तापमान में गिरावट आने के कारण, वार्षिक वर्षा लगभग १४३० मिमी (५६.३४ इंच) है। जून से सितंबर तक वर्षा लगभग १,१०० मिमी है इस जलवायु के लिए कोपेन क्लाइमेट वर्गीकरण उपप्रकार 'सिवा' (आर्मीटूटिकल जलवायु) है। **शेष पृष्ठ ८ पर...**

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

Follow for more updates

https://www.instagram.com/mainbharathun_?

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पृष्ठ ७ से... **परिवहन**

बिरसा मुण्डा अंतर्राष्ट्रीय विमानक्षेत्र

बिरसा मुण्डा अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र

'राँची' की बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय विमानक्षेत्र (आई एक्स आर) से कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, बेंगलूर, पटना, हैदराबाद, भुवनेश्वर से सीधी उड़ानें हैं। एयर इंडिया, इंडिगो और एयर एशिया जैसी कुछ प्रमुख एयरलाइंस इस उद्देश्य पर काम करती हैं। सीधे चेन्नई, चंडीगढ़, पुणे, पोर्ट ब्लेयर, नागपुर, गोवा, अमृतसर, जयपुर, लखनऊ, वाराणसी, श्रीनगर, कोयंबतूर, गुवाहाटी, तिरुवनंतपुरम, विशाखापट्टनम और अहमदाबाद जैसे शहरों के साथ भी राँची को जोड़ने के लिए योजनाएं हो रही हैं और कूछ जुडी भी हैं। एक नया अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल अब तैयार है, जो १९,६७६ वर्ग मीटर भूमि पर आयातित उपकरणों से सुसज्जित है, इसमें ५०० घरेलू और २०० अंतरराष्ट्रीय यात्रियों को संभालने की क्षमता है, इसके अलावा, बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अत्याधुनिक घरेलू कार्गो कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन मुख्यमंत्री रघुबर दास द्वारा ५० लाख टन की दैनिक क्षमता के साथ किया गया था, जो अब राँची में और बाहर चलने वाली १४ उड़ानों को पूरा करता है।

रेलवे

'राँची' रेलवे स्टेशन

'राँची' रेलवे स्टेशन दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, चेन्नई और अन्य प्रमुख शहरों से सीधे ट्रेनों से जुड़ा हुआ है, इसमें सभी मानक आवश्यकताओं के साथ छह प्लेटफार्म हैं। यह राँची हवाई अड्डे और बस टर्मिनल से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। राँची रेलवे स्टेशन ३६ हॉलिंग ट्रेनों, २७ आरंभिक ट्रेनों और २७ टर्मिनेशन ट्रेनों को पूरा करता है। राँची शहर में दो रेलवे स्टेशन है, राँची रेलवे स्टेशन और हटिया रेलवे स्टेशन।

सड़क

राष्ट्रीय राजमार्ग २३ और ३३ द्वारा बसों और निजी वाहनों द्वारा आसानी से रांची तक पहुंचा जा सकता है।

झर-झर बहते झरने, मौसम सुहाना यहाँ,
प्यारी रांची की खूबसूरती में बसा है जहाँ।

Gaurav Maroo
9431170384
Channel Partners
SIEMENS
Ingenuity for life
Hindusthan Electric House
55, Baralal Street, Upper Bazar, Ranchi,
Jharkhand, Bharat- 829201
Email: hehranchi@gmail.com
Website: www.hehindia.in

झरनों का शहर,
सुंदर यहाँ की पहचान,
खनिजों से भरी है रांची,
भारत की शान।

M.P. AJMERA
IAS (R) Ranchi
MAINA AJMERA
SANJAY AJMERA
SUNITA AJMERA
MIRIDUL AJMERA
SMITA AJMERA

- मानवसेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं।
- विश्व शांति के लिए भगवान महावीर के आदर्शों का पालन नितांत जरूरी है।
- अहिंसक जीवन शैली कोविड को आमंत्रित नहीं कर सकता है।

Vardhman House, A- 15, Harmu Housing Colony,
Ranchi, Jharkhand, Bharat-834001
Ph: 0651-2243511 (EPBX) 0651-2240496 (R) 0651-2240548
Mob. 9431101621, 9431114456, 9431937776
Email: lbdist07@yahoo.co.in

रांची के प्रसिद्ध मंदिर

पहाड़ी मंदिर

'राँची' का पहाड़ी मंदिर भक्तों की आस्था और देश के इतिहास का एक बेहद खूबसूरत और पवित्र केंद्र है, इस मंदिर से जुड़ी मुख्य बातें और पहाड़ का इतिहास नीचे दिया गया है:

धार्मिक महत्व और मान्यताएँ यह मंदिर मुख्य रूप से भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें यहाँ पहाड़ी बाबा के नाम से पूजा जाता है।

शिवलिंगः मंदिर के गर्भगृह में एक प्राकृतिक रूप से स्थापित शिवलिंग है।

मुख्य त्यौहारः महाशिवरात्रि और सावन के महीने में यहाँ लाखों भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। श्रद्धालु यहाँ राँची के 'सत्यनारायण मंदिर' की नदी से जल उठाकर कांवड़ यात्रा करते हैं।

सीढ़ियाँः पहाड़ी की चोटी पर स्थित इस मंदिर तक पहुँचने के लिए भक्तों को लगभग ४६८ सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।

ऐतिहासिक और देशभक्ति का महत्व इस मंदिर का इतिहास बेहद अनोखा है, क्योंकि यह धार्मिक आस्था के साथ-साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम से भी गहराई से जुड़ा है।

फांसी टूंगरीः ब्रिटिश शासनकाल के दौरान अंग्रेज़ इस पहाड़ी का उपयोग स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी देने के लिए करते थे, इसी वजह से स्थानीय लोग पहले इसे 'फांसी टूंगरी' भी कहते थे।

तिरंगा झंडाः देश के शहीदों के सम्मान में इस मंदिर के शीर्ष पर भारत की आज़ादी के बाद से हर साल १५ अगस्त (स्वतंत्रता दिवस) और २६ जनवरी (गणतंत्र दिवस) को पूरे राजकीय सम्मान के साथ तिरंगा झंडा फहराया जाता है, यह भारत का इकलौता ऐसा मंदिर है जहाँ स्वतंत्रता सेनानियों की याद में तिरंगा फहराने की अनूठी परंपरा है।

देवड़ी मंदिर

माँ देवड़ी मंदिर का इतिहास और धार्मिक मान्यताएँ अत्यंत रोचक हैं, इस प्राचीन मंदिर से जुड़े मुख्य पौराणिक किस्से, ऐतिहासिक तथ्य और हालिया बदलाव प्रस्तुत हैं:

पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथाएँ मंदिर की स्थापना को लेकर दो प्रमुख कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं:

मुंडा राजा केरा की कथा (१३०० ईस्वी): माना जाता है कि सिंहभूम के आदिवासी राजा केरा युद्ध में पराजित होकर लौट रहे थे, उन्होंने घने जंगल (सरना स्थल) में शरण ली, वहाँ उन्हें सपने में देवी ने दर्शन देकर मंदिर की

स्थापना का आदेश दिया। माता की पूजा करने के बाद राजा ने पुनः युद्ध लड़ा, साम्राज्य वापस जीता और इस भव्य मंदिर का निर्माण करवाया।

तमाड़ के राजा का स्वप्नः एक अन्य लोककथा के अनुसार, तमाड़ के राजा को घने जंगलों के बीच छिपे इस मंदिर की जानकारी सपने में मिली थी। जब उन्होंने झाड़ियों को साफ करवाया, तो उन्हें माता की यह अद्भुत मूर्ति मिली,

नाम का रहस्यः भूमिज और मुंडा आदिवासी भाषा में इसे पहले 'देवरी दिरी' कहा जाता था। संथाली/मुंडा भाषा में 'दिरी' का अर्थ 'पहाड़ या पवित्र पत्थर' होता है।

मूर्ति की अनूठी बनावट कमल पर विराजमान शेष पृष्ठ १० पर...

प्रकृति का सम्मान, सोहराई की पहचान;
यही है रांची की संस्कृति की शान।
पवन मंत्री- पूर्व अध्यक्ष (झारखण्ड बिहार प्रदेश माहेश्वरी सभा)
मो. ९४३११०१५७६, ९३३४७७५४९४

Pawan Kumar Mantri Anunay Mantri,
Abhinav Mantri, Ankit Mantri

MANTRI ROADWAYS

Comfortable & Luxuries Buses Plying on Various
Routs & Available for Pilgrims Marriage & Tourism
Purpose C/o Mantri Tower, Itki Road,
Piska More, Ranchi - 834005 (Jharkhand)
Mob: 9431106261, 9304191640
Email: pawankrmantri@gmail.com

TANMAY TYRES

MRF TYRES AND SERVICE FRANCHISES
Itki Road, Piska More, Ranchi - 834005 (Jharkhand)
Mobile: 9431104189, 7631134214

Authorised Distributor
RELSTAR Reliance

MANTRI ENTERPRISES

C/o Mantri Tower, Itki Road, Piska More, Ranchi, Jharkhand,
Bharat- 834005, Contact: 09431106261, 9835055542
Email: enterprisesmantri@gmail.com

पृष्ठ ९ से... देवी: आम तौर पर माँ दुर्गा शेर पर सवार होती हैं, लेकिन देवड़ी मंदिर की मूर्ति में माता कमल के फूल पर विराजमान हैं।
शिव और बैताल: माता की प्रतिमा के ठीक ऊपर भगवान शिव और उनके बगल में बैताल की आकृति बनी हुई है,
उड़ीसा शैली का प्रभाव: इस बलुआ पत्थर की नक्काशीदार मूर्ति की वास्तुकला उड़ीसा के प्राचीन मंदिरों की मूर्तिकला से मेल खाती है।
मंदिर की वास्तुकला और चमत्कारिक मान्यताएँ प्रकोप का डर: स्थानीय मान्यता है कि जो कोई भी इस मुख्य प्राचीन मंदिर के मूल ढांचे या गर्भगृह के पत्थरों से छेड़छाड़ करने का प्रयास करता है, उसे देवी के प्रकोप का सामना करना पड़ता है। यही कारण है कि सदियों बाद भी मूल मंदिर का आंतरिक हिस्सा बिल्कुल वैसा ही रखा गया है।
बिना जोड़ का ढांचा: मूल मंदिर बिना किसी सीमेंट, चूने या गारे के, केवल बड़े पत्थरों को एक के ऊपर एक इंटरलॉक करके सटीक संतुलन के साथ खड़ा किया गया है।

जगन्नाथपुर मंदिर

राँची का जगन्नाथपुर मंदिर धुर्वा इलाके में एक छोटी पहाड़ी पर स्थित झारखंड का एक बेहद ऐतिहासिक और प्रतिष्ठित धार्मिक स्थल है। पुरी के मुख्य मंदिर की याद दिलाने वाला यह मंदिर अपनी भव्यता और वास्तुकला के लिए जाना जाता है।
संस्थापक: इस मंदिर का निर्माण 'बड़कागढ़' रियासत के नागवंशी राजा ठाकुर एनी नाथ शाहदेव द्वारा करवाया गया था।
निर्माण वर्ष: मंदिर का निर्माण कार्य २५ दिसंबर १६९१ को पूरा हुआ था।

ऐतिहासिक स्थलों और आध्यात्मिक महत्व के लिए
प्रसिद्ध रांची के इतिहास प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Banwari Lal Bhala
Mob: 9234603521
Raj Kumar Bhala
Mob: 9234603524

BHALA BROTHERS

Upper Bazar, Ranchi - 834001,
Jharkhand, Bharat

पुनर्निर्माण: मुख्य मंदिर का एक हिस्सा ६ अगस्त १९९० को ढह गया था, जिसके बाद सरकार और स्थानीय समिति के सहयोग से ८ फरवरी १९९२ को इसे दोबारा भव्य रूप में तैयार किया गया।

वास्तुकला और विशेषताएँ
शैली: मंदिर को पूरी तरह ओडिशा के कलिंग स्थापत्य शैली (Kalinga Architecture) पर बनाया गया है।
ऊँचाई: यह लगभग ८५-९० मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित है और मुख्य मंदिर की ऊँचाई लगभग १०० फीट है।
मुख्य देवता: गर्भगृह में भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की काष्ठ (लकड़ी) की सुंदर मूर्तियाँ स्थापित हैं।
पहुँच मार्ग: पहाड़ी के ऊपर होने के बावजूद यहाँ भक्तों के लिए सीढ़ियों के साथ-साथ वाहन लेकर सीधे मुख्य द्वार तक जाने के लिए एक पक्की सड़क भी बनी हुई है।
ऐतिहासिक रथ यात्रा और मेला: पुरी की ही तरह यहाँ होने वाली रथ यात्रा राँची का सबसे बड़ा सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजन है।
मौसी बाड़ी यात्रा: आषाढ़ महीने के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा अपने मुख्य मंदिर से रथ पर सवार होकर कुछ दूरी पर स्थित 'मौसी बाड़ी' (गुंडीचा मंदिर) जाते हैं।
९ दिनों का प्रवास: भगवान यहाँ अपनी मौसी के घर ९ दिनों तक विश्राम करते हैं, जिसके बाद 'घुरती रथ यात्रा' (बाहुड़ा यात्रा) के ज़रिए वापस मुख्य मंदिर लौटते हैं।
ऐतिहासिक मेला: इस दौरान यहाँ जगन्नाथपुर रथ मेला का आयोजन होता है, जिसमें शामिल होने के लिए पूरे झारखंड और पड़ोसी राज्यों से लाखों आदिवासी और गैर-आदिवासी श्रद्धालु पहुँचते हैं।

श्री रानी सती दादी मंदिर

'रांची' झारखंड के सबसे प्रसिद्ध और पवित्र धार्मिक शेष पृष्ठ ११ पर...

पृष्ठ १० से... स्थलों में से एक है, रानी सती मंदिर रांची के रातू रोड में पहाड़ी मंदिर के पास, कुम्हारटोली में स्थित है। यह स्थान मारवाड़ी समुदाय और अन्य भक्तों के लिए गहरी आस्था का केंद्र है, जो मुख्य रूप से राजस्थान के झुंझुनू की दादी रानी सती (नारायणी देवी) को समर्पित है।

शांत और भव्य वातावरण: यह मंदिर अपने विशाल परिसर, साफ-सफाई और शांतिपूर्ण माहौल के लिए जाना जाता है, यहां भक्त आकर ध्यान और पूजा-अर्चना करते हैं।

एक ही परिसर में कई मंदिर: रानी सती दादी जी के मुख्य मंदिर के अलावा, इस परिसर में भगवान गणेश, शिव, हनुमान और अन्य देवी-देवताओं के मंदिर भी स्थापित हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियां: मंदिर का प्रबंधन विभिन्न उत्सवों का आयोजन करता है, जिसमें रहने की व्यवस्था और धार्मिक कार्यों के लिए हॉल उपलब्ध कराए जाते हैं।

प्रमुख उत्सव और त्योहार मंगसीर बदी नवमी महोत्सव: इस मंदिर का सबसे बड़ा और प्रमुख वार्षिक त्योहार है यह चार दिनों तक चलता है, जिसमें दादी जी की भव्य निशान यात्रा निकाली जाती है, उत्सव के दौरान छप्पन भोग, सवामणि का भोग लगाया जाता है।

बाबा अमरेश्वर धाम

(अंगराबाड़ी) झारखंड का एक अत्यंत प्रसिद्ध और पवित्र हिंदू धार्मिक स्थल है, बाबा अमरेश्वर धाममंदिर मुख्य रूप से भगवान शिव को समर्पित है और इसे 'झारखंड का दूसरा बाबाधाम' भी कहा जाता है।

मुख्य विवरण और इतिहास: यह धाम झारखंड की राजधानी रांची से

लगभग ४५ किलोमीटर दूर खूंटी-तोरपा मार्ग (NH-20) पर अंगराबाड़ी गांव में स्थित है।

नामकरण: पहले इसे 'अंगराबाड़ी मंदिर' कहा जाता था, बाद में पूज्य संत शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी द्वारा इसका नाम बदलकर 'अमरेश्वर धाम' रखा गया।

स्वयंभू शिवलिंग: मंदिर का मुख्य आकर्षण यहाँ का स्वयंभू शिवलिंग (स्वयं प्रकट हुआ) है, जो सैकड़ों साल पुराना है और एक विशाल पेड़ के नीचे स्थित है।

बिना छत का मंदिर: इस शिवलिंग के ऊपर कोई पक्की छत नहीं है, मान्यताओं के अनुसार, जब भी यहाँ छत बनाने का प्रयास किया गया, भगवान शिव ने स्वप्न में आकर मना कर दिया, वर्तमान में भक्तों की सुरक्षा के लिए केवल एक तार की जाली लगाई गई है।

अन्य मंदिर: इस ८ एकड़ के विशाल परिसर में भगवान शिव के अलावा माता पार्वती, भगवान गणेश, श्री राम-जानकी, हनुमान जी, मां दुर्गा और शनिदेव के भी भव्य मंदिर स्थित हैं।

महत्व और उत्सव सावन मेला: सावन के पावन **शेष पृष्ठ १२ पर...**

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

पृष्ठ ११ से... महीने में यहाँ देवघर की तरह ही पूरे महीने भारी मेला लगता है, लाखों शिवभक्त यहाँ आकर जलाभिषेक करते हैं।

महाशिवरात्रि: इस दिन यहाँ विशेष पूजा-अर्चना और भव्य धार्मिक आयोजनों का आयोजन किया जाता है जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु पहुँचते हैं।

रजरप्पा माँ छिन्न मस्तिका मंदिर

झारखंड के रामगढ़ जिले में स्थित एक बेहद प्रसिद्ध और प्राचीन सिद्धपीठ है, जो अपनी अलौकिक शक्ति और रहस्यमयी धार्मिक महत्व के लिए जाना जाता है, यह मंदिर झारखंड की राजधानी रांची से लगभग ८० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, असम के कामाख्या मंदिर के बाद इसे दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा शक्तिपीठ माना जाता है। यहाँ माँ छिन्नमस्तिका की बिना सिर वाली (कटी हुई गर्दन) उग्र रूप की पूजा की जाती है।दामोदर और भैरवी (भेड़ा) नदियों के पवित्र संगम पर स्थित भैरवी नदी एक झरने (रजरप्पा जलप्रपात) के रूप में ऊपर से आकर शांत दामोदर नदी में मिलती है। धार्मिक और तांत्रिक दृष्टिकोण से इस संगम स्थल को बेहद जाग्रत और चमत्कारी ऊर्जा का केंद्र माना जाता है।

माँ छिन्नमस्तिका का रहस्य और स्वरूप मंदिर के गर्भगृह में स्थापित माँ की दिव्य प्रतिमा बेहद अनोखी है:

शीश कटी प्रतिमा: मंदिर में देवी का ऐसा रूप है जिसके दाएं हाथ में तलवार और बाएं हाथ में उनका अपना ही कटा हुआ मस्तक है।

रक्त की धाराएं: माँ की कटी हुई गर्दन से रक्त की तीन धाराएं निकलती हैं। इनमें से दो धाराएं उनकी सखियाँ 'डाकिनी' और 'शाकिनी' के मुख में जाती हैं और तीसरी धारा का पान स्वयं माँ करती हैं।

विपरीत रति मुद्रा: माँ की यह प्रतिमा कमल के पुष्प पर कामदेव और रति के ऊपर खड़ी मुद्रा में स्थापित है।

पौराणिक कथा: मान्यता है कि जब माता सती का मस्तक इस स्थान पर गिरा था, तब यह शक्तिपीठ बना। एक अन्य कथा के अनुसार, माँ पार्वती ने अपनी सखियों की भूख मिटाने के लिए करुणावश अपनी ही गर्दन काट दी थी।

तंत्र साधना और मन्नतें: रजरप्पा शुरू से ही अघोर तांत्रिकों और सिद्ध साधकों के लिए तंत्र साधना का एक महाकेंद्र रहा है। पूर्णिमा और अमावस्या की रात को यहाँ विशेष रूप से तांत्रिक अनुष्ठान और भारी भीड़ होती है। यहाँ मन्नत का धागा बांधने से भक्तों की हर अधूरी इच्छा पूरी होती है और राहु-केतु जैसे ग्रह दोष शांत होते हैं।

श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर

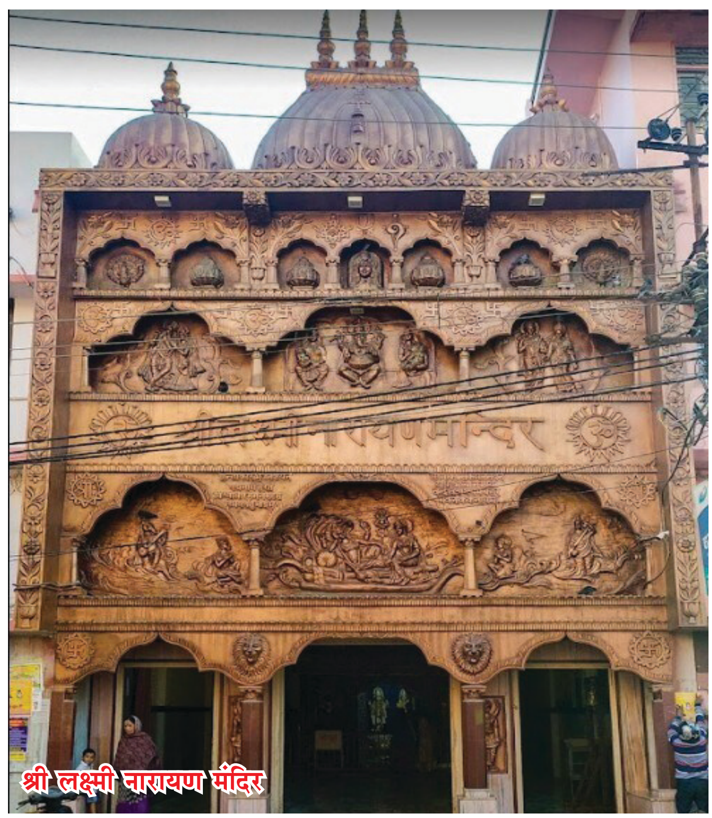

शेष पृष्ठ १३ पर...

पृष्ठ १२ से... श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर रांची का एक प्रमुख और प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, जो भगवान विष्णु (नारायण) और माता लक्ष्मी को समर्पित है यह पावन मंदिर रांची के अपर बाजार क्षेत्र में नगालमल मोदी सेवा सदन अस्पताल के पास स्थित है।

मंदिर की मुख्य विशेषताएं लोकेशन: यह मंदिर रांची के ऊपरी बाजार इलाके में सेवा सदन मार्ग पर स्थित है, जो रांची झील के उत्तरी छोर के बेहद करीब है।

धार्मिक महत्व: मंदिर में भगवान लक्ष्मी-नारायण की अत्यंत सुंदर प्रतिमाएं स्थापित हैं। स्थानीय लोगों और श्रद्धालुओं के बीच इस मंदिर की गहरी आस्था है

उत्सव और त्यौहार: यहाँ सभी हिंदू त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाए जाते हैं, विशेष रूप से देव दिवाली के अवसर पर माहेश्वरी महिला समिति और स्थानीय भक्तों द्वारा यहाँ भव्य दीपोत्सव और सामूहिक महाआरती का आयोजन किया जाता है, जिससे पूरा मंदिर परिसर दीपों की रोशनी से जगमगा उठता है।

वातावरण: यह मंदिर अपने शांत, स्वच्छ और आध्यात्मिक वातावरण के लिए जाना जाता है, जहाँ भक्तों को मानसिक शांति का अनुभव होता है।

श्री श्याम मंदिर

श्री श्याम मंदिर, हरमू रोड

अग्रसेन पथ

रांची के हरमू रोड और अपर बाजार (अग्रसेन पथ) में स्थित श्री श्याम मंदिर राजस्थान के मुख्य खाटूधाम का प्रतिरूप है। इनका संचालन 'श्रीश्याम मित्र मण्डल' द्वारा किया जाता है। यह मंदिर शहर में श्याम प्रेमियों के लिए आस्था का प्रमुख केंद्र है और अपने भव्य श्रृंगार और उत्सवों के लिए जाना जाता है।यहां हर एकादशी, फाल्गुन महोत्सव और अन्य विशेष त्योहारों पर भव्य आयोजन किए जाते हैं। भक्तगण राजस्थान के खाटू धाम तक की पदयात्रा और निशान यात्रा भी निकालते हैं।

सूर्य मंदिर

रांची से ३७ किलोमीटर की दूरी पर रांची -टाटा रोड पर स्थित यह सूर्य मंदिर बुंडू के समीप है। संगमरमर से निर्मित इस मंदिर का निर्माण १८ पहियों और ७ घोड़ों के रथ पर विद्यमान भगवान सूर्य के रूप में किया गाया है। २५ जनवरी को टुसू मेला के अवसर पर यहाँ विशेष मेले का आयोजन होता है। श्रधालुओं के विश्राम के लिए यहाँ एक धर्मशाला का निर्माण भी किया गया है। इस मंदिर की आधारशिला स्वामी श्री वासुदेवानंद सरस्वती के द्वारा २४ अक्टूबर १९९१ को रखी गयी और मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा स्वामी श्री वामदेव जी महाराज के द्वारा १० जुलाई १९९४ को सम्पन्न हुई। मंदिर में सूर्य देव के अलावा भगवान शिव, विष्णु, गणेश और माता दुर्गा की प्रतिमा विराजमान है।

सूर्य मंदिर

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

रांची के पर्यटन स्थल

'रांची झील' जिसे स्थानीय स्तर पर 'बड़ा तालाब' भी कहा जाता है, रांची शहर के ठीक बीचो-बीच स्थित एक ऐतिहासिक और बेहद लोकप्रिय स्थल

रांची झील

है। Jharkhand Tourism द्वारा हाल के वर्षों में किए गए जीर्णोद्धार के बाद यह झील अब एक प्रमुख पर्यटन और बोटिंग केंद्र बन चुकी है। इस झील के बीच में स्वामी विवेकानंद की एक विशाल प्रतिमा स्थापित है, जो इस जगह का सबसे बड़ा आकर्षण है।

स्वामी विवेकानंद की विशाल प्रतिमा: झील के ठीक बीचों-बीच स्वामी विवेकानंद की ३३ फीट ऊँची कांस्य प्रतिमा लगाई गई है, इस प्रतिमा को प्रसिद्ध मूर्तिकार राम वी. सुतार (जिन्होंने 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' कहा जाता है) ने तैयार किया है।

अद्भुत पुल: मुख्य किनारे से झील के बीच में स्थित विवेकानंद प्रतिमा तक पहुँचने के लिए एक बेहद खूबसूरत और लंबा पैदल पुल बनाया गया है।

बोटिंग और म्यूजिकल फाउंटेन: पर्यटक यहाँ शाम के समय पैडल बोट और मोटर बोटिंग का आनंद ले सकते हैं, रात के समय यहाँ रंग-बिरंगी लाइटों के साथ म्यूजिकल फाउंटेन (संगीत कार्यक्रम) भी चलता है।

शाम की सैर: झील के चारों तरफ कंक्रीट का एक सुंदर वॉकवे और बैठने के लिए बेंच बनाए गए हैं, जहाँ स्थानीय लोग और पर्यटक सुबह-शाम ठंडी हवा का आनंद लेने आते हैं।

यात्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी दूरी और लोकेशन: यह झील रांची के मुख्य व्यावसायिक केंद्र (अपर बाजार/मेन रोड) के पास, पहाड़ी मंदिर की तलहटी में स्थित है। रांची रेलवे स्टेशन से इसकी दूरी मात्र ३-४ किलोमीटर है।

समय: यह प्रतिदिन सुबह ५:०० बजे से रात ९:०० बजे तक खुला रहता है। (सुबह का समय मॉर्निंग वॉकर्स के लिए होता है, जबकि लाइटिंग और बोटिंग का मजा शाम को आता है)।

रॉक गार्डन

रॉक गार्डन

रांची शहर के भीतर स्थित 'रॉक गार्डन' एक बेहद खूबसूरत और अनोखा पार्क है। जयपुर के प्रसिद्ध 'रॉक गार्डन' की तर्ज पर बने इस पार्क को कांके बांध के ठीक बगल में एक विशाल चट्टानी पहाड़ी को काटकर तैयार किया गया है। प्रकृति और इंसानी कलाकारी का यह अनोखा संगम पर्यटकों, खासकर परिवारों और कपल्स के लिए एक पसंदीदा पिकनिक स्पॉट है।

मुख्य आकर्षण और विशेषताएं:

चट्टानी कलाकृतियाँ और मूर्तियाँ: इस गार्डन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहाँ की अधिकांश मूर्तियाँ, कलाकृतियाँ, बैठने के बेंच और रास्ते प्राकृतिक चट्टानों और पत्थरों को काटकर बनाए गए हैं।

लोहे का झूला पुल: रॉक गार्डन के अंदर बना एक शेष पृष्ठ १५ पर...

पृष्ठ १४ से... छोटा और खूबसूरत सस्पेंशन ब्रिज (झूला पुल) पर्यटकों के बीच आकर्षण का मुख्य केंद्र है, जहाँ लोग तस्वीरें खिंचवाना पसंद करते हैं।

कांके बांध का नजारा: यह गार्डन कांके बांध की पहाड़ी पर स्थित है, इसलिए यहाँ से बांध के विशाल और शांत पानी का बेहद खूबसूरत नजारा दिखाई देता है।

शाम का सूर्यास्त: शाम के समय पत्थरों के बीच से और झील के किनारे डूबते हुए सूरज को देखना यहाँ का सबसे सुकून देने वाला अनुभव माना जाता है।

यात्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी दूरी: यह रांची मुख्य शहर (अल्बर्ट एक्का चौक) से लगभग ५ किलोमीटर दूर गोंडा हिल इलाके में स्थित है। यहाँ ऑटो या कैब से आसानी से पहुँचा जा सकता है।

समय: यह गार्डन प्रतिदिन सुबह ९:०० बजे से शाम ६:०० या ७:०० बजे तक खुला रहता है।

टैगोर हिल

जिसे स्थानीय स्तर पर टैगोर हिल 'मोराबादी हिल' भी कहा जाता है। 'रांची' के सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों में से एक है। लगभग ३०० फीट की ऊंचाई पर स्थित यह पहाड़ी अपने शांत वातावरण, खूबसूरत नजारों और नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के परिवार से जुड़े इतिहास के लिए जानी जाती है।

इतिहास और महत्व: पहाड़ी का नाम रवींद्रनाथ टैगोर के बड़े भाई ज्योतिरिंद्रनाथ टैगोर के नाम पर पड़ा है। वे एक प्रसिद्ध नाटककार, संगीतकार और चित्रकार थे। वर्ष १९१२ में अपनी पत्नी के निधन के बाद, उन्होंने मानसिक शांति के लिए इस पहाड़ी को अपना निवास स्थान बनाया था।

शांति धाम: ज्योतिरिंद्रनाथ टैगोर ने पहाड़ी की चोटी पर एक खूबसूरत घर

बनवाया था, जिसे 'शांति धाम' कहा जाता है। यहाँ एक 'ब्रह्म स्थल' (स्मारक) भी मौजूद है, जहाँ वे ध्यान और साहित्य साधना किया करते थे। माना जाता है कि स्वयं रवींद्रनाथ टैगोर ने भी यहाँ रहकर अपनी कुछ रचनाएँ लिखी थीं।

मुख्य आकर्षण३६०-डिग्री सिटी व्यू: पहाड़ी की चोटी से पूरे रांची शहर और हरी-भरी वादियों का एक शानदार विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

सूर्योदय और सूर्यास्त: यह स्थान रांची में सनराइज और सनसेट देखने के लिए सबसे बेस्ट माना जाता है। शाम के समय डूबते सूरज की लालिमा यहाँ से बेहद खूबसूरत लगती है।

रामकृष्ण मिशन आश्रम: पहाड़ी की तलहटी में प्रसिद्ध स्थित है, जो कृषि और व्यावसायिक प्रशिक्षण का एक बड़ा केंद्र है। **शेष पृष्ठ १६ पर...**

आदिवासी संस्कृति की पहचान,
स्वतंत्रता संग्राम की जान,
वीरों की इस भूमि का नाम है,
हमारा प्यारा रांची शहर महान।

Padam Kumar Jain
Rattanlal Surajmull Compound, Main Road, Ranchi,
Jharkhand, Bharat-834001 | Phone : (06582) 256281
e-mail : Padamjaincbsa@gmail.com

प्रकृति का सम्मान, सोहराई की पहचान
यही है रांची की संस्कृति की शान।

रौनक पोद्दार
मो. ९३३४०२९०५०
रौनक एजेंसी
गोडाउन न० ३१८/३१९, टर्मिनल मार्केट यार्ड,
पंडरा, राँची, झारखण्ड, भारत -८३४००५

पृष्ठ १५ से... **सीढ़ियाँ और चढ़ाई:** मुख्य द्वार से चोटी तक पहुँचने के लिए पर्यटकों को लगभग २०० से २५० पक्की सीढ़ियाँ चढ़नी होती हैं। चढ़ाई के रास्ते में बैठने के लिए बेंच और शेड्स बनाए गए हैं।

पतरातू घाटी

पतरातू घाटी को झारखंड का 'शिमला' या 'ऊटी' भी कहा जाता है, यह रांची के पास स्थित एक बेहद खूबसूरत हिल स्टेशन और ड्राइविंग डेस्टिनेशन है, पहाड़ियों को काटकर बनाई गई यहाँ की एस-शेप वाली घुमावदार सड़कें और हरी-भरी वादियाँ पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं।

मुख्य आकर्षण और विशेषताएं अद्भुत घुमावदार सड़कें: इस घाटी की सड़कें इतनी बेहतरीन और खूबसूरत हैं कि इनकी तुलना अक्सर बॉलीवुड फिल्मों के शूटिंग लोकेशंस से की जाती है।

पतरातू बांध: घाटी के नीचे उतरते ही एक विशाल और खूबसूरत बांध (झील) है। यहाँ का पानी बेहद साफ है और पहाड़ियों से घिरा होने के कारण यह बहुत सुंदर दिखता है।

बोटिंग और वॉटर स्पोर्ट्स: पतरातू लेक रिसॉर्ट में पर्यटक मोटर बोट, स्पीड बोट और जेट स्की जैसी बोटिंग गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं।

सनसेट पॉइंट: घाटी के ऊँचे मोड़ों पर कई व्यू पॉइंट्स बने हैं, जहाँ से शाम को डूबते सूरज और पूरी घाटी का नजारा देखना एक यादगार अनुभव होता है।

यात्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी: यह रांची मुख्य शहर से लगभग ३५ से ४० किलोमीटर की दूरी पर रामगढ़ जिले में स्थित है। रांची से यहाँ तक का सफर सिर्फ १ घंटे में तय किया जा सकता है।

जोन्हा फॉल्स

रांची का एक बेहद शांत और मनमोहक जलप्रपात है, जिसे 'गौतमधारा फॉल्स' के नाम से भी जाना जाता है। इस खूबसूरत स्थल पर राढू नदी का पानी लगभग १४१ फीट (लगभग ४३ मीटर) की ऊंचाई से नीचे गिरता है। इसे 'गौतमधारा' इसलिए कहा जाता है, माना जाता है कि भगवान बुद्ध ने स्वयं इस झरने के पवित्र जल में स्नान किया था।

मुख्य आकर्षण और विशेषताएं

भगवान बुद्ध का मंदिर: झरने के ठीक ऊपर एक पहाड़ी पर भगवान बुद्ध का एक सुंदर मंदिर और आश्रम स्थित है, जिसका निर्माण राजा बलदेव दास बिड़ला के बेटों द्वारा करवाया गया था।

प्राकृतिक सौंदर्य: घने जंगलों, लटकती लताओं और चट्टानी रास्तों से घिरा होने के कारण यह प्रकृति प्रेमियों के लिए एक आदर्श स्थान है।

आसान सीढ़ियाँ: हुंडू फॉल्स की तुलना में यहाँ नीचे तलहटी तक पहुँचने के लिए लगभग ५०० सीढ़ियाँ उतरनी पड़ती हैं, जो काफी अच्छी तरह से बनाई गई हैं।

यात्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी: यह रांची मुख्य शहर से लगभग ४० किलोमीटर दूर, रांची-पुरुलिया रोड पर स्थित है। **शेष पृष्ठ १७ पर...**

आदिवासी संस्कृति की पहचान, स्वतंत्रता संग्राम की जान,
वीरों की इस भूमि का नाम है, हमारा प्यारा रांची शहर महान।

Vikram Khetawat
Mob: 7004086505, 9431103721
SRS
SHREE RAM STORES
Wholesale Dealer:
DHOTI, SAREE, SHAWL, BLANKET, UMBRELLA
Kunjlal Street, Chatinaya Market Upper Bazar, Ranchi, Jharakhand,
Bharat - 834001, E-mail : khetawatvikram@gmail.com

पृष्ठ १६ से... **दशम फॉल्स**

दशम फॉल्स रांची का एक और बेहद खूबसूरत और रोमांचक जलप्रपात है, जिसे 'दशम गघ' के नाम से भी जाना जाता है। प्रमुख आकर्षणों में शामिल यह झरना कांची नदी पर बनता है, जहां पानी १४४ फीट (लगभग ४४ मीटर) की ऊंचाई से नीचे गिरता है, इस झरने की सबसे अनोखी विशेषता यह है कि जब पानी ऊपर से गिरता है, तो यह १० अलग-अलग धाराओं में बंट जाता है, जिसके कारण ही इसका नाम 'दशम' (दस) पड़ा है।

मुख्य आकर्षण और विशेषताएं

अद्भुत नजारा और आवाज: इतनी ऊंचाई से गिरने वाले पानी की आवाज बहुत दूर से ही सुनाई देने लगती है, झरने के आसपास का पूरा इलाका घने जंगलों और हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

पिकनिक स्पॉट: यह रांची और आसपास के लोगों के लिए एक बेहद लोकप्रिय वीकेंड पिकनिक डेस्टिनेशन है।

सीढ़ियाँ और व्यू पॉइंट: पर्यटकों की सुविधा के लिए यहाँ सुव्यवस्थित सीढ़ियाँ और वॉच टावर बनाए गए हैं, जहाँ से झरने की पूरी खूबसूरती को कैमरे में कैद किया जा सकता है।

यात्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी: यह रांची मुख्य शहर से लगभग ४० किलोमीटर दूर, रांची-जमशेदपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर तैमारा गाँव के पास स्थित है।

हुंडू फॉल्स

'रांची' का सबसे ऊंचा और झारखंड के सबसे प्रसिद्ध जलप्रपातों में से एक है, यह सुवर्णरेखा नदी के मार्ग में बनता है, जहां पानी ३२० फीट (लगभग ९८ मीटर) की ऊंचाई से नीचे गिरता है, चट्टानों के बीच से गिरती इसकी दूधिया जलधारा पर्यटकों को बेहद आकर्षित करती है।

मुख्य आकर्षण और विशेषताएं

अद्भुत प्राकृतिक बनावट: लगातार गिरते पानी के कारण यहाँ की काली बेसाल्ट चट्टानों में बेहद खूबसूरत आकृतियाँ बन गई हैं।

पिकनिक और सुसाइड पूल: झरने के नीचे एक बड़ा प्राकृतिक पूल बनता है. हालांकि यहाँ गहरा पानी और तेज़ बहाव होने के कारण तैरने की सलाह नहीं दी जाती है।

ट्रेकिंग और सीढ़ियाँ: झरने के निचले हिस्से (तलहटी) तक पहुँचने के लिए पर्यटकों को लगभग ७०० से ८०० सीढ़ियाँ उतरनी **शेष पृष्ठ १८ पर...**

VEDA
Ajay Kumar Jain
BUILDER & DEVELOPER
Mob. : 9431101118
3n, 3rd Floor, Gopal Complex, Kutcheri Road,
Ranchi, Jharkhand, Bharat - 834 001

पृष्ठ १७ से... पड़ती हैं। नीचे उतरना तो आसान है, लेकिन वापस ऊपर चढ़ना काफी थका देने वाला होता है।

पनबिजली परियोजना: इस झरने के पानी का उपयोग सिकिदिरी हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट के लिए बिजली बनाने में भी किया जाता है।

यात्रा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी: यह रांची मुख्य शहर (रांची-पुरुलिया रोड) से लगभग ४५ किलोमीटर दूर स्थित है।

गोंडा हिल

गोंडा हिल और रॉक गार्डन की सैर पर जा सकते हैं। रॉक गार्डन को गोंडा हिल की चट्टानों को काटकर बनाया गया है, इस पार्क के अलावा गोंडा हिल की तराई में एक बांध का निर्माण भी किया गया है जो इसकी खूबसूरती को कई गुना बढ़ा देता है, यह सब मिलकर इसे एक बेहतरीन पिकनिक स्पॉट बनाते हैं। पर्यटकों को यहां आकर बहुत अच्छा लगाता है, क्योंकि यहां पर शानदार पिकनिक का आनंद ले सकते हैं।

रातू किला

(रातू पैलेस) झारखंड की राजधानी रांची के पास स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण और भव्य ऐतिहासिक धरोहर है, यह महल सदियों पुराने नागवंशी राजवंश की अंतिम राजधानी और उनका मुख्य गढ़ रहा है।

इतिहास और स्थापना राजधानी का स्थानांतरण: नागवंशी राजाओं ने साल १८७० में अपनी राजधानी को पालकोट से हटाकर रातू में स्थापित किया था।

किले का निर्माण: छोटानागपुर के ६१वें नागवंशी शासक महाराजा उदय प्रताप नाथ शाहदेव ने इस भव्य पैलेस का निर्माण कराया था, इसका काम साल १८९९ में शुरू हुआ और १९०१ में यह बनकर तैयार हुआ।

रांची में माहेश्वरी समाज

झारखंड की राजधानी रांची में सक्रिय एक प्रमुख और प्रतिष्ठित सामाजिक संगठन है, यह समाज रांची में रहने वाले माहेश्वरी समुदाय के लोगों को एकजुट करने, सांस्कृतिक परंपराओं को सहेजने और सामाजिक कल्याण के कार्यों को संचालित करने का काम करता है।

माहेश्वरी भवन

माहेश्वरी भवन, अपर बाजार (राँची) प्रसिद्ध नागर मल मोदी सेवा सदन

अस्पताल के बिल्कुल पास स्थित है, यहाँ ठहरने के लिए कमरे बेहद किफायती दामों पर मिलते हैं। कमरे साफ-सुथरे और अच्छी स्थिति में हैं, पारिवारिक यात्रा या शादी-ब्याह में आने वाले मेहमानों के रुकने के लिए यह एक बेहतरीन और बजट-फ्रेंडली विकल्प है। यहाँ के बैंक्वेट हॉल में बैठकर कार्यक्रम देखने के लिए २५० मेहमानों की क्षमता है, जबकि फ्लोटिंग (आने-जाने वाले) मेहमानों के लिए ४०० से ५०० लोगों का स्पेस मिल जाता है। यहाँ केवल शुद्ध शाकाहारी भोजन की ही अनुमति है, जहाँ विभिन्न प्रकार के भारतीय व्यंजनों का विकल्प मिलता है। यह भवन शादी, सगाई, जन्मदिन, वर्षगांठ और समाज के सांस्कृतिक व धार्मिक अनुष्ठानों के लिए नियमित रूप से बुक किया जाता है।

रांची में अग्रवाल समाज के उत्तम कार्य

१९७७ में अग्रवाल सभा का गठन हुआ, संस्थापक अध्यक्ष स्व. सत्यनारायण जी बजाज एवं मंत्री के रूप में स्व. भागचंद जी पोद्दार थे। समाज के सभी लोगों के प्रयास से सभा में वर्ष १९७९ में २० कट्ठा जमीन की रजिस्ट्री करवाई। भवन का शिलान्यास सन १९८१ में स्व. भंवरलाल जी खेतान के द्वारा किया गया। वर्तमान में तीन तल्ले का भवन है, अभी भवन में ३३ कमरे वातानुकुलित के साथ दो बड़े हॉल भी हैं। भवन में पुस्तकालय भी है।

अग्रवाल सभा ने अभी तक 'रांची' में १८ प्याऊ लगवाया है, भविष्य में और भी प्याऊ का लगवाने के लिए तत्पर है। सभा के द्वारा सामूहिक विवाह के २६ वर्ष पूरे हो चुके हैं, अभी तक अग्रवाल सभा में ३४५ जोड़ों का विवाह अपने स्तर पर कर चुकी है। आगे भी यह कार्य निरंतर होते रहेंगे, वर्तमान में सभा अध्यक्ष मनोज चौधरी व मंत्री निर्मल बुधिया जी हैं।

अग्रवाल सभा में अभी तक १९७७ से २०२६ तक २६ अध्यक्ष हुए हैं, अग्रसेन चौक का निर्माण पूर्व अध्यक्ष ललित पोद्दार के कार्यकाल में संपन्न हुआ। अग्रवाल सभा द्वारा बहुत से कार्य किए जाते हैं, जिसमें जगन्नाथ रथ यात्रा में भक्तों को सस्ते दर पर पूडी-सब्जी का वितरण एवं रामनवमी पर्व, छठ पर्व सावन पर्व पर कावड़ियों को सुविधा देना आदि कार्य शामिल है। गरीब परिवार को उनके ठहरने पर कमेटी के द्वारा जांच पड़ताल कर सुविधा प्रदान की जाती है। सामूहिक विवाह पर गरीब कन्याओं को विवाह कर संस्था एवं समाज को जो आनंद प्राप्त होता है उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। जय भारत!

महाराजा अग्रसेनभवन राँची

जल, जंगल और जमीन की अद्भुत मिसाल,
जनजातीय संस्कृति से सजी, रांची है कमाल।

Gopal Murarka
Mob: 8292261009

Pariwar
complete fashion solution under one roof

Deen Bandhu Lane, Upper Bazar,
Ranchi, Jharkhand, Bharat- 834001,
0651-316691, 9199266991

मंदिर की थाप और सरहुल का त्योहार,
यही है 'रांची' की संस्कृति का असली आधार।

BINAY SARAWAGI
Mob: 9431100311

Swastik House, Gandhi Chowk Upper
Bazar, Ranchi, Jharkhand, Bharat- 834001

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

रांची में जैन समाज

दिगम्बर जैन पंचायत और श्वेताम्बर जैन समाज बहुत सक्रिय है। रांची में कई प्रमुख जैन मंदिर हैं और विश्व प्रसिद्ध जैन तीर्थ 'श्री सम्मेद शिखरजी' (पारसनाथ) का मुख्य प्रवेश द्वार भी माना जाता है।

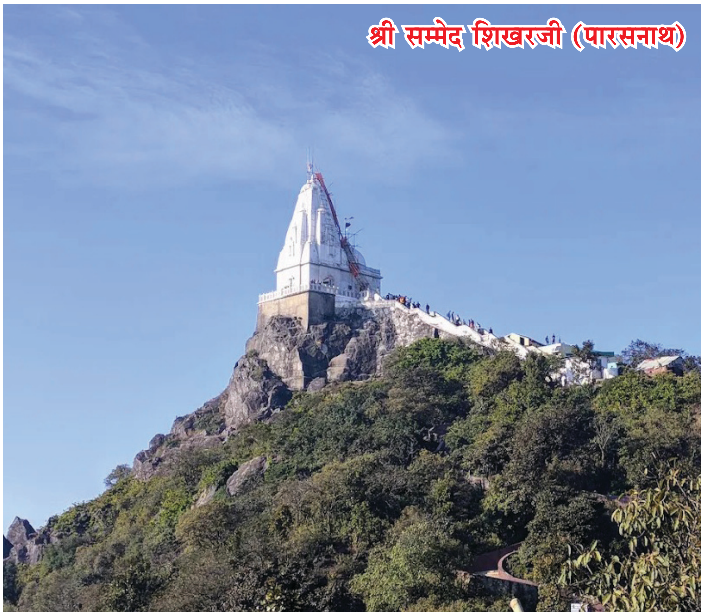
श्री सम्मेद शिखरजी (पारसनाथ)

रांची के प्रमुख जैन मंदिर:

श्री दिगम्बर जैन मंदिर:

श्री दिगम्बर जैन मंदिर

यह १०० साल से अधिक पुराना मंदिर अपर बाजार, बारालाल स्ट्रीट, रांची में स्थित है।

श्री नेमिनाथ जैन मंदिर:

श्री नेमिनाथ जैन मंदिर

यह डोरंडा, रांची में स्थित एक अत्यंत सुंदर और शांत श्वेताम्बर जैन मंदिर है। रांची में जैन भवन: हरमू रोड में दिगंबर जैन भवन है, जहाँ समाज की सभाएं और कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, समाज द्वारा कई धर्मार्थ अस्पताल और शिक्षण संस्थान भी चलाए जाते हैं।

सम्मेद शिखर आंदोलन: पारसनाथ (सम्मेद शिखरजी) को पर्यटन क्षेत्र घोषित करने के विवाद के समय रांची का जैन समाज आंदोलन और विरोध प्रदर्शनों में सबसे आगे रहा था।

दिगम्बर जैन भवन

मंदिर की थाप और सरहुल का त्योहार,
यही है 'रांची' की संस्कृति का असली आधार।
'रांची' के इतिहास प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं !

SHYAM TORKA
B.E. (Mech)
Mob: 9470193812

Flat: 4B, Kailasha Apartment,
South Office Para, Doranda, Ranchi,
Jharkhand, Bharat- 834002

रांची में पांच दिवसीय महेश नवमी धूमधाम से संपन्न

रांची माहेश्वरी सभा, महिला समिति एवं युवा संगठन के संयुक्त तत्वावधान

में 'महेश नवमी' के पावन अवसर पर पांच दिवसीय 'महेश नवमी' महोत्सव-२०२६ का भव्य आयोजन किया गया। महोत्सव में समाज के सभी आयु वर्गों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही तथा धार्मिक, सामाजिक, सेवा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार श्रृंखला आयोजित की गई।

२१ जून से प्रारंभ हुए महोत्सव के प्रथम दिन युवाओं के लिए स्कूटोथन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसके पश्चात आयोजित रक्तदान शिविर में समाज के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लेते हुए १४२ यूनिट रक्तदान किया। शिविर में ८ महिला सदस्यों ने भी रक्तदान किया, जबकि ३ युवाओं ने पहली बार रक्तदान कर समाज सेवा का प्रेरणादायी संदेश दिया, इसी अवसर पर नि:शुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर भी आयोजित किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया।

पांच दिवसीय महोत्सव के दौरान कैरम, शतरंज, सुडोकू, १ मिनट प्रतियोगिता, अंताक्षरी, खाने का स्वाद सास-बहू के साथ, फैमिली हंगामा नाइट तथा नन्हे सुपर स्टार सहित अनेक मनोरंजक एवं उद्देश्यपूर्ण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, इन कार्यक्रमों में समाज के बच्चों, युवाओं, महिलाओं एवं वरिष्ठजनों ने पूरे उत्साह और उमंग के साथ सहभागिता निभाई।

२३ जून को 'महेश नवमी' के पावन अवसर पर भव्य प्रभात फेरी एवं भगवान शिव का अभिषेक श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक वातावरण में संपन्न हुआ। समाजजनों ने भगवान महेश की आराधना कर समाज की सुख-समृद्धि एवं मंगलकामना की।

महोत्सव का समापन २८ जून को गरिमामय समारोह के साथ हुआ, इस अवसर पर समाज के वरिष्ठ सदस्यों का सम्मान, ओजस्वी एवं तेजस्वी विद्यार्थियों का पुरस्कार वितरण तथा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भगवान शिव के आदियोगी स्वरूप पर आधारित ग्लोरी टू के थीम विशेष आकर्षण का केंद्र रही, जिसने उपस्थित समाजजनों द्वारा भरपूर सराहना की गई।

समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले सभी कलाकारों का सम्मान किया गया, अंत में समाज के सभी सदस्यों ने सामूहिक सहभोज में प्रसाद ग्रहण कर महोत्सव का आनंद लिया। धार्मिक आस्था, सामाजिक सेवा, पारिवारिक सहभागिता एवं सांस्कृतिक समरसता से परिपूर्ण यह पांच दिवसीय महोत्सव समाज की एकता और संगठन का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर संपन्न हुआ। जय भारत!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in
एक दिन विश्व के मानचित्र Globe में INDIA की जगह BHARAT जरूर लिखा जाएगा।
जय भारत!
Hariom Agrawal
Mob: 9820719400
Hari Shringar
'आओ हम भगवान सजाएं'
House of Gods Ornaments

• Poshak • Mukut • Har • Kundal Etc.
Shop No.1, G. P. Chawl, Madhav Baug, Panjrapole Compound, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 004
Tel.: 2242 5602/6674 7511
E-mail: info@harishringar.net | Web: www.harishringar.net

१ १ ३ वर्ष पुरानी मारवाड़ी सहायक समिति के समाज सेवार्थ कार्य (संक्षिप्त)

रांची: १९१३ में स्थापित, शहर की सबसे पुरानी और प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं में से एक मारवडी सहायक समिति है। यह मुख्य रूप

से मारवाड़ी भवन (हरमू रोड, रांची) से संचालित होती है और समाज कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य और विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों के लिए जानी जाती है। समिति की प्रमुख गतिविधिया और सेवाओं में शामिल हैं:

सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम: संस्था द्वारा समय-समय पर होली मिलन, मारवाड़ महोत्सव, और पारंपरिक प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है।

मुक्तिधाम संचालन: समिति शहर के प्रमुख श्मशान घाट (जैसे हरमू मुक्तिधाम/मोक्षधाम) का संचालन और प्रबंधन करती है।

स्वास्थ्य और राहत शिविर: संस्था द्वारा स्वास्थ्य शिविरों और जनहित के सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से योगदान दिया जाता है।

अन्य कार्य: मारवाड़ी युवक व्यायामशाला का संचालन पिछले ५० वर्षों से भी अधिक समय से किया जा रहा है।

⇨ विगत में दो स्कूलों का संचालन भी संस्था के द्वारा किया जाता रहा है।

⇨ गोविन्द भवन का संचालन किया जाता है, जो कि सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र है।

⇨ इसके अलावा समय समय पर मेडिकल कैंप, मोतियाबिंद शिविर, ठंड में गरीबों हेतु कम्बल एवं स्वेटर का वितरण, गरीब कन्याओं का विवाह आदि कई कार्य किये जाते हैं।

⇨ मारवाड़ी भवन द्वारा प्रदत्त स्थान पर राँची के सबसे पुराने बालिका विद्यालय-श्री शिवनारायण मारवाड़ी कन्या मध्य पाठशाला का संचालन लगभग ९५ वर्षों से हो रहा है।

संस्था के द्वारा लगभग ८००० वर्गफीट के बहुद्देशीय वातानुकूलित सभागार का निर्माण किया गया है। जो सभी के लिए सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र बनेगा।

मारवाड़ी युवा मंच द्वारा जनहितैषी कार्य संक्षिप्त प्रस्तुति

मारवाड़ी युवा मंच, रांची शाखा, ऑल इंडिया मारवाड़ी युवा मंच अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का एक प्रमुख और सक्रिय सामाजिक संगठन है, यह संस्था १८ से ४० वर्ष के युवाओं को सामाजिक सरोकार, संस्कृति और जनहित के कार्यों में एकजुट करती है। रांची शाखा द्वारा किए जाने वाले प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं:

स्वास्थ्य सेवाएं: जरूरतमंदों के लिए मुफ्त स्वास्थ्य जांच शिविर, रक्तदान कार्यक्रम और विकलांगों के लिए कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर आयोजित करना।

सामाजिक कल्याण: भीषण गर्मी में आम जनता के लिए नि:शुल्क पेयजल (प्याऊ) की व्यवस्था करना।

सांस्कृतिक कार्यक्रम: समाज को जोड़ने और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए समय-समय पर 'भजन जैमिंग' और अन्य सामुदायिक उत्सवों का आयोजन करना है।

चिन्मय अमृत यात्रा द्वारा आयोजन

जीवन में उच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आत्मप्रयास आवश्यक : वीके गड्डुयान

रांची: चिन्मय मिशन के ७५ वर्षों के गौरवशाली इतिहास और आध्यात्मिक विरासत का संदेश लेकर निकली चिन्मय अमृत यात्रा वाहिनी का मुख्य कार्यक्रम चिन्मय मिशन आश्रम में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि विश्व हिंदू परिषद के मिलिंद परांडे थे। अध्यक्षता चिन्मय मिशन ट्रस्ट के सचिव वीके गड्डुयान ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुदेव की प्रार्थना एवं भक्तिमय संगीत के साथ हुआ। गुरुदेव के जीवन एवं चिन्मय मिशन की ७५ वर्षों की गौरवगाथा पर आधारित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया। श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय छह के श्लोक पांच की व्याख्या करते हुए ट्रस्ट के सचिव ने बताया कि मनुष्य स्वयं अपने उत्थान और पतन का कारण है, उसका मन ही उसका सबसे बड़ा मित्र और सबसे बड़ा शत्रु बन सकता है। जीवन में उच्च लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आत्मप्रयास आवश्यक है, जबकि गुरु और संत केवल मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। कार्यक्रम के सफल आयोजन में स्वामी परिपूर्णानंद, सचिव सतीश प्रसाद व कार्यकारिणी के सदस्यों की सक्रिय भूमिका रही।

मारवाड़ी कॉलेज में विशेष प्रदर्शनी

मारवाड़ी कॉलेज, रांची में विशेष प्रदर्शनी आयोजित थी चिन्मय अमृत यात्रा के तहत प्रदर्शनी में गुरुदेव स्वामी चिन्मयानंद के जीवन, चिन्मय मिशन की ७५ वर्षों की गौरवगाथा तथा भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत से जुड़े विविध विषयों को प्रदर्शित किया गया।

स्कूलों में गीता के संदेश, के साथ विद्यार्थियों से संवाद

चिन्मय अमृत यात्रा वाहिनी के तहत धार्मिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक

कार्यक्रम आयोजित किया गया। यात्रा के रांची आगमन पर बाजे-गाजे, वैदिक मंत्रोच्चार तथा पूज्य गुरुदेव स्वामी चिन्मयानंद के जयघोष के साथ श्रद्धालुओं ने भव्य स्वागत किया। यजमान के रूप में चिन्मय मिशन के मुख्य सेवक अजय मारू, अध्यक्ष आर. एस. अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य राजीव रंजन, प्रशांत शांडिल्य एवं उनके परिवारजन उपस्थित रहे, इसके बाद सरस्वती शिशु विद्या मंदिर एवं विवेकानंद विद्या केंद्र में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। चिन्मय वाहिनी के सदस्यों ने विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित करते हुए श्रीमद्भगवद्गीता के ज्ञान की उपयोगिता व जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति में उसके महत्व पर प्रकाश डाला। जेवीएम श्यामली और डीपीएस के विद्यार्थियों के साथ भी संवाद कार्यक्रम आयोजित हुआ। ब्रह्मचारी सुधीर चैतन्य व तारिणी चैतन्य ने विद्यार्थियों को गुरुदेव के विचारों तथा गीता के प्रेरणादायी संदेशों से अवगत कराया।

नेशनल स्टेकहोल्डर कंसल्टेशन २०२६ का आयोजन

रांची: झारखंड सरकार द्वारा हाल ही में नई दिल्ली के होटल ताज में ८ और ९ जुलाई २०२६ को दो दिवसीय 'नेशनल स्टेक होल्डर कंसल्टेशन २०२६' का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक का मुख्य उद्देश्य राज्य को उद्योग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), आईटी और पर्यटन का नया हब बनाना है, इस सभा में अपना वक्तव्य देते हुए रांची के प्रसिद्ध उद्योगपति पवन बजाज जी।

एक युगपुरुष जिसने, समाज को दी नई दिशा

स्व.भागचंद पोद्दार

अग्रवाल सभा, राँची के संस्थापक, पूर्व अध्यक्ष, पूर्व मंत्री, झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष तथा प्रख्यात समाजसेवी स्वर्गीय श्री भागचंद पोद्दार जी केवल एक पदाधिकारी नहीं, बल्कि समाज के लिए एक विचारक, एक प्रेरणा और एक युग के निर्माता थे, उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज सेवा, पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण, शिक्षा, संगठन निर्माण एवं लोककल्याण के कार्यों को समर्पित कर दिया। उनका संपूर्ण जीवन इस बात का उदाहरण रहा कि निस्वार्थ सेवा, सादगी और दृढ़ संकल्प के बल पर समाज में स्थायी परिवर्तन लाया जा सकता है।

४ मई १९३६ को राजस्थान में जन्मे श्री पोद्दार जी ने अपने कर्मों से राँची ही नहीं, बल्कि पूरे पूर्वी भारत में समाज सेवा की एक नई मिसाल स्थापित की, उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि समाज की वास्तविक उन्नति तभी संभव है, जब प्रत्येक परिवार सम्मान और आत्मनिर्भरता के साथ आगे बढ़े।

उनकी सबसे बड़ी देन सामूहिक विवाह आंदोलन रही। वर्ष १९९२ में राँची में उन्होंने सामूहिक विवाह की शुरुआत की, जो उस समय एक दूरदर्शी एवं ऐतिहासिक पहल थी, अपने जीवनकाल में उन्होंने ३२५ से अधिक जोड़ों का विवाह संपन्न कराया। उनकी प्रेरणा से झारखंड सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं ने सामूहिक विवाह की इस परंपरा को अपनाया, जिससे हजारों परिवारों को आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबल मिला, आज झारखंड सरकार द्वारा संचालित 'मुख्यमंत्री कन्यादान योजना' जैसी पहल भी कहीं न कहीं उसी सामाजिक चिंतन को आगे बढ़ाती हैं, जिसकी नींव उन्होंने वर्षों पूर्व रखी थी।

आप अग्रवाल सभा, राँची के संस्थापक मंत्री रहे तथा संस्था को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में आपका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा। झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष के रूप में भी आपने समाज को संगठित करने, नई सोच देने तथा सेवा की भावना को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। आपका नेतृत्व सदैव सेवा, सरलता, ईमानदारी और समर्पण का प्रतीक रहा, आप मानते थे कि 'पद नहीं, सेवा ही व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान होती है।'

आपकी पहचान केवल एक समाजसेवी के रूप में नहीं थी, बल्कि आप ऐसे मार्गदर्शक थे जिनके द्वार पर आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपनापन, स्नेह और समाधान लेकर लौटता था, आपने समाज को केवल संगठित ही नहीं किया, बल्कि नई पीढ़ी को यह संदेश दिया कि संगठन, संस्कार और सेवा ही समाज की सबसे बड़ी शक्ति हैं, आपके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि समाज को केवल शब्दों से नहीं, बल्कि अपने जीवन के प्रत्येक कर्म से प्रेरित किया।

जनवरी २०२६ में ८९ वर्ष की आयु में आपके निधन का समाचार फैलते ही पूरे मारवाड़ी समाज में शोक की लहर दौड़ गई। आपकी अंतिम यात्रा एवं श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए लगभग १,५०० से अधिक लोगों का जनसैलाब उमड़ पड़ा, वह दृश्य अत्यंत भावुक और अविस्मरणीय था, हर ओर नम आँखें, मौन श्रद्धा और अपार सम्मान का वातावरण था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो समाज ने अपना अभिभावक, मार्गदर्शक और परिवार का एक प्रिय सदस्य खो दिया हो। यह अभूतपूर्व जनसमूह आपके प्रति समाज के अटूट विश्वास, प्रेम और सम्मान का जीवंत प्रमाण था।

आप अपने पीछे पुत्र पवन पोद्दार, सात पुत्रियां, २ पौत्र निखिल एवं निकुंज तथा चौथी पीढ़ी के तीन परपोतियों एवं एक परपोते सहित एक समृद्ध एवं संस्कारित परिवार छोड़ गए, अपने जीवनकाल में आपने चौथी पीढ़ी का स्नेह प्राप्त किया, अपने संस्कारों और आशीर्वाद से समृद्ध किया तथा पूर्ण, संतुष्ट और सार्थक जीवन व्यतीत किया। भारतीय संस्कृति में अपनी चौथी पीढ़ी को देखकर 'सोने की सीढ़ी चढ़कर स्वर्गारोहण' करना अत्यंत परम सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है, यह दिव्य सौभाग्य भी आपका प्राप्त हुआ। आप अपने पीछे केवल एक परिवार ही नहीं, बल्कि हजारों ऐसे परिवार छोड़ गए, जिनके जीवन में सेवा, संस्कार, सम्मान और मानवता का दीप प्रज्वलित किया।

'व्यक्ति भले ही इस संसार से चला जाए, किंतु उसके आदर्श, संस्कार और समाज के लिए किए गए कार्य सदैव अमर रहते हैं। स्वर्गीय श्री भागचंद पोद्दार जी का जीवन सेवा, समर्पण, संगठन और मानवता का ऐसा प्रकाशपुंज है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।' जय भारत!

रांची गौशाला न्यास

झारखंड की राजधानी रांची में स्थित सबसे पुराने और प्रतिष्ठित गौ-संरक्षण संस्थानों में से एक है। संक्षिप्त इतिहासइसकी स्थापना ११३ वर्ष पहले (लगभग १९१३) हरमू रोड, रांची में हुई थी। मूल रूप से इसका संचालन समिति द्वारा किया जाता था, लेकिन १९४९ में इसे एक विस्तृत रूप देते हुए 'रांची गौशाला न्यास' (ट्रस्ट) में बदल दिया गया। रांची गौशाला का मुख्य परिसर लगभग ३ एकड़ में फैला है। इसके अलावा सुकुरहुटू और कुटुक (गोकुल धाम) में भी गौशालाएं संचालित की जा रही हैं। वर्तमान में रांची गौशाला की विभिन्न इकाइयों में लगभग ९०० से अधिक गोवंश का संरक्षण किया जा रहा है। इस संस्था का वार्षिक बजट लगभग दो करोड़ रुपये है। इसका मुख्य हिस्सा समाज के दानदाताओं द्वारा चारा, अनाज और आर्थिक सहयोग के रूप में प्राप्त होता है। गायों के समुचित इलाज के लिए स्थायी पशु चिकित्सकों की नियुक्ति की गई है और इसका प्रबंधन सुचारू रूप से चल रहा है।

कृपया मुझे INDIA ना बोलें क्योंकि मैं भारत हूँ

विश्वनाथ नारसरिया

संस्थापक महामंत्री श्री श्याम मित्र मंडल
रामगढ़ शेखावाटी-निवासी रांची प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ८९८७४२४२९६

विश्वनाथ जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'रांची' में काफी बहुत अंतर आ गया है। 'रांची' की आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है। इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट बहुत अधिक हुआ है। बड़ी-बड़ी बिल्डिंग, मल्टी स्टोरेज टावर बन गए हैं, हर तरह की सुविधाएं हैं। पहले 'रांची' नैसर्गिक रूप से बहुत ही सुंदर था, चारों और हरियाली ही हरियाली दिखाई देती थी, हमेशा ठंडा वातावरण रहता था, पर आज 'रांची' प्राकृतिक रूप से बहुत बदल गया है। धार्मिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां कई देवी-देवताओं के प्राचीन और पौराणिक मंदिर हैं, आदिवासी समाज का 'सरना' स्थल बना हुआ है। आदिवासी क्रांतिकारक बिरसा मुंडा जी के नाम पर एयरपोर्ट बना हुआ है। शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत ही प्रगति हुई है। 'रांची' में कई छोटे बड़े उद्योग स्थापित हैं, हर तरह के मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स हैं, व्यापारिक रूप से भी यह क्षेत्र आज दिन-प्रतिदिन प्रगति की ओर है। 'रांची' का पागलखाना सबसे प्रसिद्ध है। पहले 'रांची' में ४० स्थानीय अखबार प्रकाशित होते थे और 'रांची एक्सप्रेस' यहां का सबसे पुराना अखबार है। 'रांची' में राजस्थानी समाज की आबादी लगभग ७० हजार के करीब है, जिनमें अग्रवालों की संख्या सबसे अधिक है, यहां अग्रवाल सभा है, अग्रसेन भवन है, श्याम मित्र मंडल द्वारा यहां श्याम मंदिर की स्थापना की गई है, जिसके माध्यम से हर शनिवार को श्याम भंडारा का आयोजन किया जाता है। यहां माहेश्वरी समाज, ब्राह्मण समाज, जैन समाज व अन्य राजस्थानी समाज की अपने-अपने सामाजिक संगठन और संस्थाएं हैं, समस्त राजस्थानियों की 'मारवाड़ी सहायक समिति' सबसे पुरानी संस्था है, जो ११० वर्ष पुरानी है, यहां मारवाड़ी सम्मेलन भी कार्यरत है, जिसके अंतर्गत कई छोटी-छोटी सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं। यहां राजस्थानी समाज द्वारा मारवाड़ी महाविद्यालय की स्थापना, मारवाड़ी शिक्षा ट्रस्ट के माध्यम से गंगाप्रसाद बुधिया द्वारा स्थापित किया गया था, जिसमें २५००० के लगभग विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, वर्तमान में यह सरकार द्वारा संचालित है, इसके अलावा शिवनारायण मारवाड़ी कन्या पाठशाला भी संचालित है। राजस्थानी समाज द्वारा यहां रानी सती दादी का लगभग १२५ वर्ष पुराना मंदिर बना हुआ है, जिसके संस्थापक स्व. भोलाराम नारसरिया व स्व. सुखदेव जालान थे। यहां राजस्थानी समाज की ही संस्कृति विहार संस्था संचालित है, संस्कृति विहार के संस्थापक श्रेष्ठी गंगाप्रसाद बुधिया जी ने स्व. सीताराम मारू जी को संस्कृत विहार का दायित्व सौंपा। यहां नागरमल मोदी सेवा सदन अस्पताल भी संचालित है और भी कई राजस्थानी समाज की संस्थाएं कार्यरत है, रांची में राजस्थानीयों में सबसे वरिष्ठ समाजसेवी प्रखर व्यक्तित्व के धनी श्री देवकीनंदन की नारसरिया शतायु वर्ष के हो रहे हैं। 'रांची' के राजा रातु महाराज का किला भी यहां से १० किलोमीटर की दूरी पर ५० एकड़ में फैला हुआ है, जहां पर दुर्गापूजा बहुत ही भव्य रूप में मनाई जाती है, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में.....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक नाम, एक पहचान रहना चाहिए 'भारत'!

विश्वनाथ जी मूलतः राजस्थान के 'रामगढ़ शेखावाटी' के निवासी है, आपका परिवार लगभग १६० सालों से झारखंड में बसा हुआ है, आपका जन्म व शिक्षा 'रांची' में ही संपन्न हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। संस्थापक महामंत्री श्री श्याम मित्र मंडल, रांची, पूर्व अध्यक्ष मारवाड़ी सहायक समिति, पूर्व अध्यक्ष मारवाड़ी स्कूल, पूर्व सचिव फुलबाबा ट्रस्ट, पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष बिहार प्रांतिय मारवाड़ी सम्मलेन, पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मलेन, पूर्व सचिव संस्कृति विहार, अध्यक्ष बिरसा औषधि संस्थान, अध्यक्ष हिंदू शिक्षा केंद्र, ट्रस्टी फुलबाबा आश्रम, ट्रस्टी मारवाड़ी शिक्षा ट्रस्ट, ट्रस्टी श्री श्याम मंदिर गुमला, पूर्व संपादक जयमातृ भूमि, कोषाध्यक्ष संतु लाल बुधिया पुस्तकालय, पूर्व अध्यक्ष श्री गोविन्द भवन, पूर्व सचिव सेवा संकल्प, सदस्य एकल योजना, संरक्षक सदस्य अग्रवाल सभा रांची, संस्थापक सदस्य रांची जिमखाना क्लब, संरक्षक रांची जिला मारवाड़ी सम्मलेन, आर.एस.एस.स्वयंसेवक, सदस्य श्री राम लला पूजा समिति, कार्यकारणी सदस्य नागरमल मोदी सेवा सदन अस्पताल, पूर्व उपमंत्री श्री रानीसती मंदिर रांची, आजीवन सदस्य श्री रानीसती मंदिर झुंझुनू, पूर्व सचिव विद्यार्थी परिषद रांची, संरक्षक क्षेत्रीय सुरक्षा समिति में सक्रिय हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पवन बजाज

व्यवसायी व समाजसेवी

सीकर निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३११७०४०३

पश्चिम बंगाल के 'रानीगंज' में जन्मे पवन जी का महात्मा गांधीजी से परिवारिक संबंध रहा है। आपका जन्म और शिक्षा पश्चिम बंगाल के 'रानीगंज' में संपन्न हुई है। १९९३ से आप झारखंड की 'रांची' में बसे हैं, आपका शुरुआती जीवन बहुत ही संघर्ष भरा रहा। कई कार्यों के पश्चात् आपने 'रांची' शहर में रियल एस्टेट और होटल व्यापार स्थापित किया, अपने दृढ़ संकल्प और अनुशासन के साथ आज आपने एक नया मुकाम हासिल किया है।

अपनी कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए आप कहते हैं कि पहले और आज के 'रांची' में बहुत अंतर आ गया है, यहाँ दिन-प्रतिदिन आबादी बढ़ रही है, पर उस हिसाब से इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट नहीं हुआ है, पर शिक्षा व प्राकृतिक वातावरण के लिए यह पूरे भारत में सबसे उत्तम है, यदि सरकार द्वारा यहाँ टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाए, तो यह भारत का सबसे उत्तम स्थान माना जाएगा, यहाँ कई प्राकृतिक झरने, पहाड़ियाँ हैं, जो बहुत ही रमणीय हैं। धार्मिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है। यहाँ जगन्नाथ जी का मंदिर बना है, जो पूरी के जगन्नाथ की तर्ज पर है। यहाँ रथ यात्रा भी निकाली जाती है। टैगोर हिल पर टैगोर स्मारक बना है, जहाँ चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। पहाड़ी पर स्थित शिव मंदिर भी एक धार्मिक और प्राकृतिक स्थान है, राजस्थानी समाज द्वारा यहाँ श्याम मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर, रानी सती दादी मंदिर, तिरुपति बालाजी मंदिर बना हुआ है। सूर्य देव का मंदिर भी बहुत ही उत्तम है। रांची के रजरप्पा में स्थित छिन्नमस्तिका मंदिर एक प्राचीन और अत्यंत पूजनीय सनातनी तीर्थ स्थल है, रामगढ़ छावनी से लगभग २८ किलोमीटर दूर स्थित यह मंदिर दामोदर और भैरवी (भेरा) नदियों के पवित्र संगम पर बसा है, यह मंदिर देवी छिन्नमस्तिका की एक दुर्लभ, सिरविहीन मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है, जो आत्म-बलिदान और ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीक है। सामाजिक वातावरण यहाँ का बहुत ही उत्तम है, हर धर्म व समाज के लोग बसे हैं, लोगों में आपसी प्रेम, व्यवहार और सौहार्द का वातावरण रहता है, यहाँ अग्रवाल समाज की कई संस्थाएँ कार्यरत हैं, जिनमें नागरमल मोदी सेवा सदन और सबसे पुरानी संस्था मारवाड़ी सेवा समिति भी कार्यरत है। यहाँ राजस्थानी समाज द्वारा 'रांची गौशाला ट्रस्ट' संचालित है, जो भारत की बड़ी गौशालाओं में से एक है और भी कई विशेषताएँ हैं हमारे 'रांची' में.....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए। विश्व में किसी भी देश के २ नाम नहीं है और नाम का कभी अनुवाद भी नहीं होता, इसलिए हर भाषा में अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'! जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

अशोक कुमार पुरोहित

अध्यक्ष मारवाड़ी ब्राह्मण सभा

रामगढ़ शेखावाटी निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८३५१९६६८४

अशोक जी अपनी जन्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'रांची' पहाड़ी क्षेत्र है, यहां का मौसम व वातावरण हमेशा उत्तम रहता है। 'रांची' एक छोटा-सा क्षेत्र था, जब यह बिहार का हिस्सा हुआ करता था, 'झारखंड' बिहार से अलग राज्य बना और झारखंड राज्य की राजधानी 'रांची' बना तबसे यहां के विकास को बहुत गति प्राप्त हुई है, हर क्षेत्र में डेवलपमेंट दिखाई देता है, आज 'रांची' में हर तरह की सुविधाएं है, यहां बहुत ही मनोरम स्थान है, प्राकृतिक वातावरण होने के कारण यहां कई नदियां, झरने, पहाड़ हैं, जो यहां की सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं, यदि सरकार द्वारा यहां इस क्षेत्र में ध्यान दिया जाए तो अवश्य यहां का टूरिज्म बहुत बढ़ेगा। शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में भी यहां कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान, अस्पताल व सुविधाएं हैं, रिंस, वेदांता जैसे कई चिकित्सालय हैं, शिवनारायण कन्या पाठशाला व रानी सती दादी मंडल, मारवाड़ी उच्च माध्यमिक विद्यालय, मारवाड़ी कन्या पाठशाला जैसे कई शैक्षणिक संस्थाएं कार्यरत हैं, साथ ही कई कोचिंग सेंटर भी यहां चलते हैं, यहां राजस्थानी मारवाड़ी समाज के कई संस्थाएं, धर्मशाला मंदिर, भवन आदि कार्यरत है, जो सामाजिक व धार्मिक कार्यों के लिए हमेशा सक्रिय रहती है। धार्मिक रूप से यहां पहाड़ी शिव मंदिर, रानी सती दादी मंदिर, लक्ष्मी नारायण मंदिर, श्याम बाबा मंदिर, सालासर बालाजी मंदिर, कुछ किलोमीटर पर रजरप्पा में शक्तिपीठ, ६० किलोमीटर पर देवड़ी देवी का मंदिर व अन्य कई धार्मिक संस्थान संचालित है, यहां मारवाड़ी ब्राह्मण समाज के लगभग ७०० परिवार बसे हैं। मारवाड़ी ब्राह्मण समाज का यहां सभा भवन और संस्था बनी हुई है, जो मारवाड़ी ब्राह्मण सभा के नाम से जानी जाती है, अन्य कई सामाजिक संगठन हैं, यहां दुर्गा पूजा, होली, दीपावली मिलन व अन्य त्यौहार बड़े धूमधाम से मनाए जाती हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में.....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

अशोक जी मूलतः राजस्थान स्थित 'रामगढ़ शेखावाटी' के निवासी हैं। आपका जन्म शिक्षा 'रांची' में ही संपन्न हुई है, यहां अपने कार्यक्षेत्र में सक्रिय हैं, साथ ही मारवाड़ी ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष हैं, दुर्गा पूजा महोत्सव समिति, रामनवमी के महावीर मंडल के पूर्व अध्यक्ष रहे है, विश्व हिंदू परिषद 'रांची' से जुड़े हैं, अन्य कई संस्थानों में भी सक्रिय हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

बनवारी लाल भाला

व्यवसायी व समाजसेवी

जयपुर निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९२३४६०३५२१

बनवारीलाल जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'रांची' क्षेत्र थोड़ा ऊंचाई पर स्थित होने के कारण अपनी प्राकृतिक सुंदरता से भरा हुआ है, यहां नदियां, झरने, जंगल से भरा हुआ है, यदि सरकार द्वारा इस दिशा पर विकास के लिए प्रयास किया जाए, तो 'रांची' टूरिज्म का सबसे अच्छा क्षेत्र बन सकता है, 'रांची' झारखंड का हिस्सा बना है, पर यहां जो विकास होना चाहिए था व नहीं हुआ, ना ही कोई विशेष औद्योगिक प्रगति हुई है, ना ही इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट दिखाई देता है, यहां के लोगों की आर्थिक स्थिति का मुख्य आधार खेती, सब्जियां, लघु उद्योग और ट्रेडिंग का कारोबार है, शिक्षा के क्षेत्र में 'रांची' हमेशा सही उत्तम रहा है, शिक्षा के क्षेत्र में 'रांची' हमेशा से ही उत्तम रहा है, यहां कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान है, राजस्थानी समाज द्वारा यहां मारवाड़ी विद्यालय व कॉलेज स्थापित है, जो वर्तमान में सरकार द्वारा संचालित है, उच्च चिकित्सा से सुविधाओं के लिए बड़े महानगरों में जाना पड़ता है, धार्मिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत उत्तम है, यहां पर राजरप्पा देवी का मंदिर बहुत ही प्राचीन और मान्यता प्राप्त है, आदिवासियों के कई 'सरना' स्थल बने हैं, राजस्थानी समाज द्वारा यहां लक्ष्मी नारायण का मंदिर बना हुआ है, जिसमें मेरे पिताजी रामचरण जी की भी विशेष भूमिका रही, इसके अलावा मारु परिवार के सहयोग से यहां भव्य सूर्य मंदिर बना हुआ है, यहां पर पहाड़ी शिव मंदिर भी है और भी कई देवी-देवताओं के मंदिर है, 'रांची' में कई गौशालाएं भी संचालित है, जिसमें राजस्थानी समाज का भी पूरा योगदान रहता है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में.....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत', इंडिया तो अंग्रेजों का दिया नाम है, हमारी वास्तविक पहचान भारत से थी, 'भारत' से ही रहनी चाहिए।

बनवारीलाल जी मूलतः राजस्थान 'जयपुर' के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षो से 'रांची' में बसा हुआ है, आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही यथासंभव सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

नीरज अग्रवाल

निवर्तमान अध्यक्ष मारवाड़ी युवा मंच

झुंझुनूं निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९९३४८८७३५५

नीरज जी अपनी कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'रांची' का मौसम बहुत ही उत्तम रहता है, यहां चारों तरफ प्राकृतिक नजारे नदियां, झरने, पहाड़ियां और जंगल हैं जो इसकी सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। यहां के लोग बहुत ही सहयोगी व उलझे हुए लोग हैं। आने वाले समय में यहां विकास के कई आयाम दिखाई दे रहे हैं। यहां के लोगों का जीवन स्तर भी बहुत ही अच्छा है, इसीलिए यह रहने के लिए बहुत ही उत्तम व सुरक्षित स्थान है। पिछले कुछ सालों में यहां बहुत विकास हुआ है, इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में भी प्रगति हुई है। केंद्रीय सरकार द्वारा यहां कई प्रकल्प चलाए गए हैं, साथ ही स्थानीय सरकार द्वारा भी यहां कई प्रोजेक्ट चलाए जा रहे हैं, जिससे यहां की आर्थिक उन्नति दिखाई देती है, जब से यह झारखंड का जिला बना है तब से 'रांची' में बहुत उन्नति हुई है। यहां कई बड़े-बड़े कंपनियां और उद्योग कार्यरत हैं। 'रांची' के नजदीक धनबाद कोल सिटी ऑफ़ इंडिया, मिनरल सिटी ऑफ़ इंडिया 'रांची' है। आदिवासी क्षेत्र होने के कारण यहां आदिवासियों की संख्या अधिक है, उनके जीवन स्तर में भी वृद्धि हो रही है, यहां सभी का सर्वांगीण विकास हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी 'रांची' बहुत ही उत्तम है, यहां 'रांची' के ही नहीं आसपास के जिलों और राज्यों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं, आईआईटी, आईआईएम जैसे कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान हैं। पर्यटन के क्षेत्र में भी यहां ४०-५० किलोमीटर के दायरे में कई झरने, नदियां, जंगल, पहाड़ हैं जो 'रांची' की सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं, यदि सरकार द्वारा इस दिशा में भी ध्यान दिया जाए तो 'रांची' एक उत्तम पर्यटन स्थल बन सकता है, यहां कई प्राचीन देवी-देवताओं के मंदिर हैं, जिसमें पहाड़ी शिव मंदिर बहुत ही प्रसिद्ध है, यहां अंग्रेजों द्वारा क्रांतिकारियों को फांसी की सजा दी जाती थी, इसलिए भी यह मंदिर और यह क्षेत्र प्रसिद्ध है, इसके अलावा राजस्थानी समाज द्वारा श्याम बाबा जी का मंदिर, रानी सती दादी का मंदिर, कृष्ण प्रणामी मंदिर व अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर बने हैं, यहां कई गौशालाएं भी संचालित हैं और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल'भारत' ही रहना चाहिए। भारत विश्व गुरु था और रहेगा, अभी पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण इसे इंडिया नाम से संबोधित किया जा रहा है, पर हमारी पहचान भारत नाम से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए।

नीरज जी मूलतः राजस्थान स्थित 'झुंझुनू' के निवासी हैं। आपका परिवार कई पीढ़ियों से मुंगेर के 'तारापुर' में बसा हुआ है। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने 'कोलकाता' से ग्रहण की है, पिछले १५ सालों से आप 'रांची' में बसे हैं और फार्मास्यूटिकल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, मारवाड़ी युवा मंच के निवर्तमान अध्यक्ष हैं, अन्य कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908

Follow for more updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

सज्जन कुमार पाडिया

अध्यक्ष रांची जिला मारवाड़ी सम्मेलन

नवलगढ निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३११००८३५

सज्जन जी अपनी कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'रांची' प्राकृतिक रूप से बहुत ही सुंदर है, चारों ओर जंगलों से घिरा हुआ है और ऊंचाई पर स्थित होने के कारण यहां बाढ़ का खतरा बहुत ही कम है, अपनी प्राकृतिक नजारों के लिए पूरे झारखंड में 'रांची' सबसे उत्तम माना जाता है, आसपास के दायरे में यहां कई प्राकृतिक झरने, नदियां और तालाब है, यहां का मौसम हमेशा उत्तम रहता है, अर्थव्यवस्था की बात की जाए तो भारत की सबसे बड़ी कंपनीयां हेवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन व स्टील अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया 'रांची' में स्थित है, इसके अलावा छोटे-बड़े कई उद्योग व्यापार 'रांची' में होते हैं, यहां की अर्थव्यवस्था बहुत ही उत्तम है, राजस्थानी समाज के लोग व्यापार से ही जुड़े हुए हैं, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में भी यह उत्तम है, साथ ही यहां का सामाजिक वातावरण बहुत ही अच्छा है, हर धर्म समाज के लोग बसे हुए हैं, मारवाड़ी समाज की संख्या बहुत है, यहां हर समाज की अपनी-अपनी सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं, मारवाड़ी सहायक समिति राजस्थानियों की सबसे प्रमुख व पुरानी संस्था है, इसके अलावा अन्य कई सामाजिक धार्मिक संस्थाएं यहां कार्यरत है, धार्मिक रूप से भी 'रांची' बहुत ही उत्तम है, यहां छिन्नमस्ता देवी का मंदिर, देवडी माता का मंदिर, कृष्ण प्रणामी मंदिर जिसे कांच मंदिर कहा जाता है व अन्य कई देवी-देवताओं के भी मंदिर है, राजस्थानी समाज द्वारा खाटू श्याम जी का मंदिर, रानी सती दादी का मंदिर, सालासर बालाजी का मंदिर, सूर्य मंदिर व अन्य कई मंदिर बनाए गए हैं, यहां समाज द्वारा कई गौशालाएं भी संचालित है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में.....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' यही हमारे देश के वास्तविक पहचान है।

सज्जन जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नवलगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म और शिक्षा पश्चिम बंगाल के 'पुरुलिया' में संपन्न हुई है, पिछले ४० सालों से आप 'रांची' में बसे हैं और व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। 'रांची' जिला मारवाड़ी सम्मेलन व श्री हनुमान मंडल के अध्यक्ष पद पर सक्रिय हैं, अग्रवाल सभा 'रांची' के वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों में भी पदस्थ हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

विक्रम खेतावत

निवर्तमान अध्यक्ष झारखंड थोक वस्त्र विक्रेता संघ

नागौर निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३११०३७२१

विक्रम जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'रांची' एक पहाड़ी इलाका है, जो चारों तरफ जंगलों से भरा है, यहां हमेशा हरियाली ही नजर आती है, इसलिए यहां का तापमान हमेशा ठंडा रहता है, पर समय के अनुसार इसमें भी परिवर्तन आया है। यहां लोगों के बीच आपसी प्रेम व्यवहार और सौहार्द का वातावरण बना रहता है, समाज के लोग एक दूसरे के सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं, इसीलिए यहां राजस्थानी समाज की कई सामाजिक संस्थाएं कार्यरत हैं। विकास की बात की जाए तो जितना होना चाहिए था उतना तो नहीं हुआ है पर पिछले १० सालों में यहां प्रगति दिखाई दे रही है। औद्योगिक क्षेत्र में भी विकास हो रहा है। यहां कई छोटी-बड़ी कंपनियां कार्यरत हैं, विशेषकर ट्रेडिंग का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है और कृषि भी यहां की उत्तम है। राजस्थानी समाज के अधिकतर लोग व्यापार से ही जुड़े हैं। धार्मिक रूप से भी यह क्षेत्र बहुत ही उत्तम है, यहां आदि शक्ति देवी राजरप्पा का मंदिर है जो शक्तिपीठों में से एक मानी जाती है, इसके अलावा देवी माता का मंदिर, जगन्नाथ प्रभु का मंदिर, खाटू श्याम जी का मंदिर, श्याम बाबा जी का मंदिर व अन्य देवी देवताओं के मंदिर हैं। यहां प्राकृतिक नजारे, कई झरने, पार्क हैं, जो यहां की सुंदरता को और भी बढ़ा देता है। अग्रवाल समाज की बात की जाए तो यहां अग्रवाल सभा, अग्रसेन भवन बना हुआ है, यहां की सबसे पुरानी संस्था 'मारवाड़ी सहायक समिति' है, इसके अलावा कई सामाजिक संगठन यहां कार्यरत हैं, शिक्षा के क्षेत्र में भी 'रांची' बहुत ही उत्तम है, यहां कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान हैं, राजस्थानी समाज द्वारा यहां कई शैक्षणिक संस्थान और अस्पताल संचालित है, जिसमें सेवा सदन अस्पताल सामाजिक संस्था है, यहां 'रांची गौशाला न्यास' के अंतर्गत तीन गौशालाएं संचालित हैं, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' हमारे देश का वास्तविक नाम है और एक ही नाम हमारी पहचान रहे, इंडिया तो विदेशियों द्वारा दिया गया नाम है, वर्तमान सरकार मोदी जी द्वारा भी 'भारत' का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

विक्रम जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'धनकोली गांव' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा 'रांची' में संपन्न हुई है, यहां आप टेक्सटाइल व अन्य कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, झारखंड थोक वस्त्र विक्रेता संघ के पूर्व अध्यक्ष रहे, अग्रवाल सभा के आजीवन सदस्य, रांची मारवाड़ी सम्मेलन व अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन व अन्य कई संस्थानों से जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

सुरेशचंद्र अग्रवाल

अध्यक्ष झारखंड प्रांत मारवाड़ी सम्मेलन
सीकर निवासी-रांची प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९०३११७७४२१

सुरेश जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'रांची' की सबसे बड़ी पहचान यहां का प्राकृतिक सौंदर्य वातावरण जो हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है, यहां का मौसम हमेशा सुहावना रहता है, १९८० के पहले यह एक हिल स्टेशन की तरह था, इसीलिए जब यह बिहार के अंतर्गत था, यह ग्रीष्मकालीन राजधानी थी, जैसे-जैसे यहां की जनसंख्या बढ़ती गई, वैसे वैसे यहां के प्राकृतिक वातावरण और औद्योगीकरण में भी बदलाव हुआ है, पर आज भी 'रांची' हमारे लिए सबसे सुंदर और शांत शहर है, जो झरनों, नदियों से भरा हुआ है, शहर से बाहर निकला जाए तो चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आती है, यहां कई डैम, पार्क है, जो यहां की सुंदरता को और बढ़ते हैं। झारखंड का अर्थ ही है जंगलों की भूमि। आज भी यहां के आदिवासी जो यहां के मूल निवासी हैं, उनकी संस्कृति और भोजन बहुत ही रूचिकर होता है। सामाजिक रूप से भी 'रांची' का वातावरण बहुत ही उत्तम है, यहां हर धर्म व समाज के लोग बसे हैं, हर त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। यहां राजस्थानी समाज होली, दीपावली मिलन समारोह होता है। हर समाज की अपनी-अपनी सामाजिक संस्थाएं हैं, मारवाड़ी समाज के यहां लगभग ३२ संस्थाएं हैं, जो धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है, यहां की सबसे पुरानी संस्था मारवाड़ी सहायक समिति है जो ११३ वर्ष पुरानी है और लगभग उतनी ही पुरानी 'रांची गौशाला' है, जिसमें लगभग हजारों की संख्या में गौवंश है। मारवाडी समाज की बात की जाए तो यहां मारवाडी समाज के लगभग २०००० परिवार बसे हैं। अग्रवाल समाज का यहां अग्रवाल सभा व अग्रसेन भवन, अग्रसेन चौक बने हुए हैं। पर्यटन के क्षेत्र में भी यहां बहुत ही दर्शनीय स्थल है, पहाड़ी शिव मंदिर, रातु महाराज की हवेली, राजरप्पा देवी का मंदिर व अन्य कई प्रमुख स्थान है और भी कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में....।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए।

सुरेश जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले में स्थित 'जोरावर नगर' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा 'रांची' में संपन्न हुई है, यहां कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, झारखंड प्रांत मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, अन्य कई सामाजिक संगठनों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

निकुंज पोद्दार

उपाध्यक्ष मारवाड़ी युवा मंच रांची
दातारामगढ़ निवासी-रांची प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ७७७९९८०००९

निकुंज जी का कहना है कि 'रांची' मेरे लिए केवल जन्मभूमि और कर्मभूमि नहीं, बल्कि मेरी पहचान और मेरी भावनाओं का अभिन्न हिस्सा है। पहले की रांची अपनी सादगी, आत्मीयता, आपसी सम्मान और सहयोग की भावना के लिए जानी जाती थी। आज शहर तेज़ी से विकास की राह पर अग्रसर है और आधारभूत संरचना के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं, जिससे 'रांची' देश के उभरते शहरों में अपनी मजबूत पहचान बना रही है, फिर भी मेरा मानना है कि यदि बड़े कॉर्पोरेट घराने एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ यहाँ निवेश करें, तो रोजगार के व्यापक अवसर सृजित होंगे, स्थानीय उद्योगों को नई दिशा मिलेगी और झारखंड की आर्थिक प्रगति को अभूतपूर्व गति मिलेगी। 'रांची' की सबसे बड़ी शक्ति यहाँ का सामाजिक सौहार्द, प्राकृतिक सौंदर्य और वर्षभर का सुखद वातावरण है। विभिन्न समाजों ने वर्षों से सेवा, संस्कार और सामाजिक समरसता की परंपरा को जीवंत रखा है। विशेष रूप से मारवाड़ी समाज ने शिक्षा, स्वास्थ्य, गौसेवा, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के माध्यम से उल्लेखनीय योगदान दिया है। मारवाड़ी युवा मंच, रांची देश की अग्रणी शाखाओं में से एक है और उसका हिस्सा होना मेरे लिए गर्व का विषय है, साथ ही अग्रवाल युवा सभा एवं अन्य सामाजिक संगठनों के माध्यम से भी समाजहित में कार्य करने का अवसर मिलता रहा है। धार्मिक दृष्टि से भगवान जगन्नाथ मंदिर, पहाड़ी मंदिर, खाटू श्याम मंदिर सहित अनेक आस्था केंद्र तथा समाज द्वारा संचालित गौशालाएँ 'रांची' की सांस्कृतिक पहचान को और समृद्ध बनाती हैं।

समाजसेवा के संस्कार और जनकल्याण की प्रेरणा मुझे अपने पूज्य दादाजी स्वर्गीय श्री भागचंद जी पोद्दार से मिली, जिनके आदर्श आज भी मेरे जीवन का पथप्रदर्शन करते हैं। मूलतः राजस्थान के सीकर जिले के दातारामगढ़ से होने के बावजूद मेरा पालन-पोषण और प्रारंभिक शिक्षा रांची में हुई तथा इंजीनियरिंग की शिक्षा एम.आई.टी., मणिपाल से प्राप्त करने के बाद आज मैं रांची में विनिर्माण उद्योग से जुड़कर 'मेक इन इंडिया', पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों और रोजगार सृजन के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने का प्रयास कर रहा हूँ।

मेरा विश्वास है कि उद्योग, सेवा और संस्कार—इन तीनों का समन्वय ही एक समृद्ध समाज और सशक्त राष्ट्र का आधार है, जहाँ तक राष्ट्र के नाम का प्रश्न है, मेरा मानना है कि हमारे देश की वास्तविक पहचान 'भारत' है और सार्वजनिक जीवन में 'भारत' नाम का अधिकाधिक प्रयोग हमारी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रीय गौरव को और सुदृढ़ करेगा।' जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

राधेश्याम अग्रवाल

अध्यक्ष-चिन्मय मिशन, राँची
सीकर निवासी-राँची प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३३४७००५५२

राधेश्याम जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'राँची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'राँची' झारखंड राज्य की राजधानी है, यह प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध नगर है, जहाँ कोयला, ताँबा (कॉपर), एल्युमिनियम तथा ग्रेफाइट जैसे महत्वपूर्ण खनिज पाए जाते हैं, इसके कारण यहाँ की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ रही है। राँची की एक प्रमुख पहचान हेवी इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन (HEC) तथा स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAIL) जैसी प्रतिष्ठित औद्योगिक इकाइयाँ हैं, जिन्होंने बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया है, इसके परिणामस्वरूप यहाँ के लोगों के जीवन स्तर में निरंतर सुधार हुआ है।'राँची' का सामाजिक वातावरण अत्यंत शांत, सौहार्दपूर्ण एवं समरसता से परिपूर्ण है, यहाँ का आदिवासी समाज अत्यंत सरल, सहज एवं मिलनसार है, जिससे सामाजिक समन्वय की उत्कृष्ट भावना देखने को मिलती है। प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से भी 'राँची' अत्यंत रमणीय है, यहाँ का मौसम वर्षभर सुहावना रहता है, तथा आसपास अनेक झरने, पहाड़ियाँ, नदियाँ और तालाब इसकी सुंदरता में चार चाँद लगाते हैं।

यदि धार्मिक स्थलों की बात करें तो पहाड़ी शिव मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, श्याम मंदिर, रानी सती दादी मंदिर, जैन मंदिर तथा राम मंदिर प्रमुख हैं, इसके अतिरिक्त रजरप्पा स्थित माँ छिन्नमस्ता मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय है, यह मंदिर दामोदर एवं भैरवी नदियों के संगम पर स्थित है और अपनी धार्मिक एवं प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, ऐसी अनेक विशेषताएँ 'राँची' को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

राधेश्याम जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले के 'कावट गाँव' के निवासी हैं। आपकी शिक्षा राँची में ही संपन्न हुई। आप व्यवसाय से जुड़े होने के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में आप चिन्मय मिशन, राँची के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं तथा अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

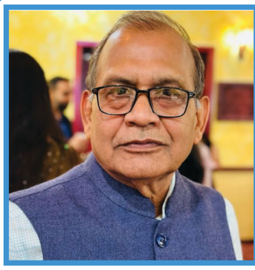

श्याम तोरका

सचिव चिन्मय मिशन
चिड़ावा निवासी-रांची प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४७०१९३८१२

श्याम जी अपनी कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'रांची' में काफी परिवर्तन आया है। पहले की 'रांची' का मौसम बहुत ही सुहावना होता था, चारों ओर हरियाली, छोटे-छोटे तालाब नजर आते थे, यह बिहार की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करती थी, जब से झारखंड बना और झारखंड की राजधानी 'रांची' बनने से यहां कई बदलाव हुए हैं, विकास दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा है, इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट के कारण यहां के वातावरण में भी कई परिवर्तन आए हैं, पर इसके बावजूद आज भी 'रांची' की पहचान उसका प्राकृतिक सौंदर्य और अपनापन है। यहां लोगों का सामाजिक और व्यापारिक समन्वय बहुत ही अच्छा है, 'रांची' में अपर बाज़ार व्यापार उद्योग का गढ़ कहा जाता है, यहां के मारवाड़ी समाज का हर धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में बड़ा योगदान रहता है, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और धर्म हर क्षेत्र में यह संस्थाएं अग्रणी है। अग्रवाल सभा, महेश्वरी सभा, रोटरी क्लब अन्य क्लब यह सब मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित संस्थाएं हैं, यहां समाज द्वारा रांची गौशाला भी संचालित है, समाज द्वारा यहां लक्ष्मी नारायण मंदिर, रानी सती दादी मंदिर व कई देवी-देवताओं के मंदिर है। राँची में 'चिन्मय मिशन' जो वेदांत, गीता व अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है, इस संस्था द्वारा भवन भी बना हुआ है और इसमें ७०% राजस्थानी समाज के लोग जुड़े हुए हैं और इस संस्था के भवन निर्माण में स्व. सीताराम मारू की बहुत ही बड़ी भूमिका रही है, संस्था द्वारा यहां छात्र-छात्राओं को गीता पाठ भी कराया जाता है, बाल विहार शिविर का भी आयोजन होता है और भी कई धार्मिक क्रियाकलाप इस मिशन के द्वारा किए जाते हैं। 'रांची' प्राकृतिक रूप से आज भी बहुत ही सुंदर है, आधुनिकता का असर तो दिखाई देता है, पर वॉटरफॉल, पहाड़ी क्षेत्र, झील आदि यहां की सुंदरता को बढ़ाते हैं, लोगों में इस क्षेत्र के बारे में जागरूकता भी आई है। शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में भी 'रांची' में उन्नति हुई है, यहां मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित प्रतिष्ठित नागरमल मोदी सेवा सदन सुपर स्पेशलिस्ट अस्पताल सफलतापूर्वक रांची के आम जनता की सेवा में लगा है। धार्मिक रूप से भी यह क्षेत्र उत्तम है, यहां रजरप्पा देवी का मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, देवडी माता का मंदिर व अन्य कई प्रमुख धार्मिक स्थान है, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में....

मेरा मानना है कि 'रांची' आगे भी तेजी से विकसित होगा शिक्षा स्वास्थ्य उद्योग पर्यटक हर क्षेत्र में संभावनाएं हैं, जरूरत है हम सब मिलकर इसे स्वच्छ, संस्कृत और सेवा प्रदान शहर बनाएं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' केवल देश नहीं बल्कि एक राष्ट्र भावना है। सर्वप्रथम तो हमें अपने देश में अपने लोगों के बीच इसका अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करना चाहिए, जिससे लोगों में जागरूकता आए हमें अपनी मातृभाषा अपनी बोली को विशेष महत्व देना चाहिए, आज के युवाओं को इसमें बढ़-चढ़कर जोड़ने की आवश्यकता है।

श्याम जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चिड़ावा' के निवासी हैं। आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा यही संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा मैकेनिकल इंजीनियरिंग में की है। 'रांची' के मैंकॉन लिमिटेड में डायरेक्टर के पद पर सेवानिवृत्ति हुए हैं। वर्तमान में सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं, सेवा भारती और चिन्मय मिशन रांची के सचिव पद पर कार्यरत हैं। आपका एक पुत्र और एक पुत्री हैं। अमेरिका में आपकी पुत्री कैंसर स्पेशलिस्ट चिकित्सक के रूप में कार्यरत हैं, आपका पुत्र भी सिंगापुर में बसे हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

विमल दस्सानी जैन

मंत्री श्री ओसवाल संघ

सरदारशहर निवासी-'रांची' प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९४३११११५८३३

विमल जी अपनी कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि पहले और आज के 'रांची' में जमीन आसमान का अंतर आ गया है, जब मैं यहां १९७५ में आया था, तब यहां का मौसम सुहाना रहता था, थोड़ी सी गर्मी पड़ने पर बारिश हो जाती थी, यह बिहार की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करती थी, पर आज 'रांची' का मौसम भी बहुत परिवर्तित हो गया है, पहले शहर में भी हरियाली दिखाई देती थी, पर अब पूरा शहर कंक्रीट जैसा लगता है। 'रांची' शहर से बाहर निकल जाएं तो हरियाली दिखाई देती है, इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है, आज आवागमन के अच्छे साधन हो गए हैं। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल के सुविधाएं अच्छी हो गई हैं, आज 'रांची' को शिक्षा का केंद्र कहा जाता है, यहां कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान हैं, राजस्थानी समाज के भी कई विद्यालय और महाविद्यालय है, जिनमें से मारवाड़ी महाविद्यालय, ओसवाल संघ द्वारा संचालित कन्या पाठशाला, दिगम्बर समाज, अग्रवाल समाज द्वारा भी यहां विद्यालय संचालित है। सामाजिक रूप से भी 'रांची' बहुत ही उत्तम है, यहां हर धर्म व समाज के लोग बसे हैं, लोगों में परस्पर मेल-मिलाप अच्छा है, यहां जैन समाज के तीन मंदिर है, जिसमें दो दिगम्बर के और एक श्वेताम्बर मंदिर है। दिगम्बर जैन समाज का भवन और श्वेताम्बर समाज का स्थानक भी बना हुआ है। प्राकृतिक और नैसर्गिक रूप से 'रांची' आज भी बहुत सुंदर है, यहां ५-६ प्राकृतिक झरने हैं, जो 'रांची' की सुंदरता को और बढ़ा देते हैं, इसके अलावा धार्मिक रूप से भी यह बहुत ही उत्तम है, यहां सूर्य मंदिर, पहाड़ी शिव मंदिर, टैगोर हिल जैसे कई दर्शनीय स्थल है, यहां के राजा रातु महाराज का किला भी बहुत ही सुंदर है। 'रांची' में मारवाड़ी समाज द्वारा 'रांची गौशाला न्यास' संचालित है, जिसके अंतर्गत तीन गौशालाएं चलती हैं, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में.....

हर भाषा में अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

विमल जी मूलत राजस्थान में स्थित 'सरदारशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, लगभग ५० सालों से आप 'रांची' में बसे हैं और टेक्सटाइल व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक संगठनों में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ सभा 'रांची' के अध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में श्री ओसवाल संघ 'रांची' के मंत्री पद पर कार्यरत है, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

रौनक पोद्दार

प्रदेश सचिव झारखंड कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिस्ट्रीब्यूटर असोशिएसन

चूरू निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९३३४०२९०५०

रौनक जी अपनी जन्मभूमि व कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'रांची' की सबसे बड़ी विशेषता यहां का प्राकृतिक वातावरण और मौसम है जो हमेशा ही सुंदर और उत्तम रहता है, समय के साथ इसमें भी परिवर्तन आ रहे हैं, पर अन्य शहरों के मुकाबले 'रांची' आज भी सुंदर है, यहां पर पहाड़ी शिव मंदिर है जो प्राचीनता के लिए जाना जाता है, कहते हैं कि अंग्रेजों के समय यहां फांसी दी जाती थी, इसके अलावा सूर्य मंदिर, देवडी मंदिर व अन्य देवी-देवताओं के मंदिर हैं। प्राकृतिक रूप से भी 'रांची' बहुत ही सुंदर है, यहां दशम जलप्रपात, जोन्हा जलप्रपात, सीता जलप्रपात जैसे कई प्राकृतिक स्थान हैं, जो अपनी सुंदरता के लिए जाने जाते हैं। राजस्थानी समाज द्वारा यहां श्री राणी सती दादी मंदिर, श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर, श्री तिरुपति बालाजी मंदिर, श्री श्याम मंदिर व अन्य मंदिर बने हुए है। 'रांची' में मारवाड़ी समाज बहुत ही सक्रिय है, धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में हमेशा अग्रणी रहते हैं, समाज द्वारा यहां कई धर्मशालाएं और सामाजिक संस्थाएं कार्यरत है, हर समाज के अपने-अपने भवन और मंदिर बने हुए हैं। श्री गंगाप्रसाद बुधिया द्वारा स्थापित मारवाड़ी कॉलेज जिसमे २५०० विद्यार्थी पढाई करते है। समाज द्वारा यहां गौशाला न्यास भी संचालित है, जिसके अंतर्गत तीन गौशालाएं हैं। आर्थिक रूप से अभी 'रांची' बहुत ही उत्तम है, शिक्षा के क्षेत्र में यहां कई बड़े-बड़े शैक्षणिक संस्थान है, ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, पर बचपन से हमें स्कूलों में इंडिया ही सिखाया गया है, जो आज हमारे बोलचाल की भाषा में एकदम सामान्य रूप से शामिल है और इससे निकलना थोड़ा कठिन है, पर कोशिश की जानी चाहिए।

रौनक जी मूलतः राजस्थान स्थित 'चूरू' के निवासी है। आपका जन्म व शिक्षा 'रांची' संपन्न हुई है, यहां आप एफएमजीसी व इलेक्ट्रलस व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही आप सामाजिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहते हैं, अग्रवाल सभा, 'मारवाड़ी सहायक समिति' जैसी सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं, इसके अलावा व्यापारिक संस्था झारखंड कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिस्ट्रीब्यूटर असोशिएसन के प्रदेश सचिव पद पर कार्यरत हैं। श्री राम लल्ला पूजा समिति के संस्थापक सदस्य, फेडरेशन चैंबर्स कॉमर्स एंड इंडस्ट्री व झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य और एफएमसीजी सब कमेटी के चेयरमैन के रूप में कार्यरत हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

गोपाल मुरारका

अध्यक्ष श्री श्याम मित्र मंडल रांची

नवलगढ निवासी-रांची प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ८२९२२६१००९

गोपाल जी अपनी कर्मभूमि 'रांची' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आज से लगभग ४० साल पहले 'रांची' एक हिल स्टेशन के रूप में जाना जाता था, जहां चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आती थी, पर समय के साथ-साथ यहां परिवर्तन होने से इन सभी क्षेत्रों में कमी आई है, अन्य शहरों के मुकाबले 'रांची' आज भी प्राकृतिक रूप से बहुत ही सुंदर है और यहां का मौसम हमेशा उत्तम रहता है। विकास की बात की जाए तो स्थाई सरकार न होने के कारण यहां उद्योग व्यापार के क्षेत्र में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है। हैवी इंजियरिंग कॉरपोरेशन राष्ट्रीय औद्योगिक कंपनी है पर सरकार की निष्क्रियता से इसके कार्य प्रणाली में भी बहुत कमी आ गई है, आज 'रांची' में व्यापार जरूर है पर उतना नहीं जितना होना चाहिए। सामाजिक रूप से 'रांची' उत्तम है, सभी राजस्थानी समाज एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, हर त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। आदिवासियों के साथ भी अच्छा सामंजस्य हैं, यहां राजस्थानी समाज द्वारा दो गौशालाएं चलाई जाती हैं, जिसमें लगभग हजार के करीब गोवंश हैं। धार्मिक रूप से भी रांची बहुत ही उत्तम है यहां का पहाड़ी शिव मंदिर एक जागृत देवस्थान है, अंग्रेजों के समय यहां फांसी दी जाती थी, इसके अलावा देवडी में देवी का मंदिर भी एक मान्यता प्राप्त मंदिर है। ५१ शक्ति पीठ में से एक मानी जाने वाली छिन्नमस्तिका माता का मंदिर यहां से कुछ दूरी पर रजरप्पा में स्थित है, जहां दो नदियां दामोदर और भैरवी का संगम स्थल है। राजस्थानी समाज द्वारा यहां खाटू श्याम जी के दो मंदिर बने हुए हैं, इसके अलावा अन्य कई देवी-देवताओं के मंदिर भी निर्मित किए गए हैं। पर्यटन के लिए 'रांची' का मौसम हमेशा ही उत्तम रहता है, यहां कई बड़े-बड़े जलप्रपात हैं, पर अभी भी रांची के पर्यटन के क्षेत्र में विकास होना बाकी है। शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में भी उत्तम है, 'रांची' ऐसी और कई विशेषताएं हैं हमारे 'रांची' में....

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत', इंडिया तो अंग्रेजों का दिया नाम है जो हमारी पहचान कभी नहीं बन सकता।

गोपाल जी मूलतः राजस्थान के सीकर जिले में स्थित 'नवलगढ़' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले में स्थित 'खड़गपुर' में संपन्न हुई है, पिछले ४३ वर्षों से आप 'रांची' में बसे हैं और मॉल व रेस्टोरेंट के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री श्याम मित्र मंडल रांची के अध्यक्ष पद पर सेवारत हैं। मारवाड़ी सहायक समिति अग्रवाल सभा के सदस्य हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

शकुंतला करनानी

साहित्यकारा- कवयित्री

बीकानेर निवासी-चेन्नई प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९९४००६७५८२

शकुन्तला करनानी मूल राजस्थान बीकानेर के निवासी हैं आपका जन्म शिक्षा कोलकाता में संपन्न हुआ है वर्तमान में आप चेन्नई वासी है। आप कई साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ी हुई है, मंचों पर काव्य पाठ, मंच संचालन रुचि रखती हैं। आपकी रुचि हर विषय पर लेखन में है। साहित्यिक क्षेत्र व अन्य क्षेत्रों में कई पुरस्कारों से सम्मानित हैं। वैष्णव गौरव सम्मान, अनुभूति सम्मान, M.O.P वैष्णव महिला महाविद्यालय द्वारा मंजरी सम्मान, गुरु श्री शान्ति विजय जैन कॉलेज द्वारा करिशमा २०२३ सम्मान, अखिल भारतवर्षीय महिला संगठन द्वारा कवयित्री सम्मान, कई कविताओं व रचनाओं इत्यादि से पुरस्कृत हैं, आकाशवाणी व दूरदर्शन पर कविताओं एवं रचनाओं का पठन भी किया है। आपकी रचना 'भावनाओं का समन्दर', 'शकुन्तलम्' प्रकाशित पुस्तकें हैं। मैं भारत हूँ फाउंडेशन अन्तराष्ट्रीय संस्था द्वारा वर्ष २०२४ व २०२६ में 'कोहिनूर सम्मान से सम्मानित (गीतकार व कवयित्री) 'अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन' तमिलनाडु, केरल, पांडिचेरी साहित्य समिति संयोजिका पद पर कार्यरत हैं। ३ सत्रों से ऊख्ड साहित्य समिति 'कोहिनूर सम्मान' प्राप्त २०२६ मंचों पर 'विशिष्ठ अतिथि व निर्णायक भूमिका निभाई है, पत्रिकाओं व अखबारों में आपके लेख एवं कविताएँ प्रकाशित हुए हैं आप गायन में भी रुचि रखती हैं। अन्तरराष्ट्रीय संस्था मैं भारत हूँ फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'भारत को भारत ही बोला जाए, INDIA नहीं पर आधारित अति सार्थक व सराहनीय कार्यक्रम कोलकाता के भव्य सभागार में आयोजित हुआ दिनांक २८ जून को कोलकाता के जाने माने प्रतिष्ठित व राजस्थानी समाज के लोग जुड़े हुए थे, भारत के दूसरे प्रान्तों से भी मानो राजस्थान ने पश्चिम बंगाल के 'धन- धान्यो' में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई थी। कार्यक्रम की शुरुआत तुलसी को जल चढ़ाने से हुई। यह सन्देश था वृक्षारोपण व पर्यावरण संरक्षण का ।देश भक्ति गीत की प्रस्तुति के पश्चात नृत्यनाटिकाओं ने हर दर्शक के हृदय को छुआ ही नहीं बल्कि भूतकाल के स्वतंत्रता संग्राम को जीवंत किया शून्य से अन्त तक। रोंगटे खड़े करने वाले दृश्यों का प्रस्तुतिकरण हर दर्शक के हृदय को आकर्षित ही नहीं झकझोर भी गया। सभी पात्रों का अभिनय सार्थकता लिए था।अतिथिगणों का स्वागत बहुत सुचारु, सुखद व प्रशंसनीय रहा व साहित्य को भी प्रोत्साहित किया गया। राजस्थान के घूमर नृत्य की प्रस्तुति व वेशभूषा भव्यता लिए थी। बालिकाओं द्वारा अखबार से बनी सुन्दर वेशभूषा का प्रदर्शन अवर्णनीय था। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गौसेवा को बढ़ावा व प्रोत्साहन प्रदान करना था और भारत को भारत ही कहा जाए इन्डिया नहीं। मैं आभारी हूँ 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की, जिन्होंने मुझे कवयित्री 'कोहिनूर' सम्मान से अलंकृत किया। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

आइये हम सभी 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!

'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के तत्वाधान में कोलकाता में २८ जून को आयोजित कार्यक्रम 'भारतीय सांस्कृतिक समागम भारतम्' का वर्णन करते हुए ओम जी कहते हैं कि यह बहुत ही अच्छा कार्यक्रम रहा, इस कार्यक्रम के माध्यम से भारतीय संस्कृति और विचारों को बहुत ही अच्छे रूप में प्रस्तुत किया गया। पाश्चात्य संस्कृति से निकलकर प्राचीन भारतीय संस्कृति को अपनाना यह बहुत ही अच्छी मुहिम है, इस सफल कार्यक्रम के लिए सभी पदाधिकारीयों की सराहना करता हूं और अपेक्षा करता हूं कि 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' इस तरह के कार्यक्रम आगे भी कोलकाता में करता रहे, जिसमें हम यथासंभव सहयोग देंगे।

ओम जालान

चैयरमेन महाराजा अग्रसेन धाम

राजलदेसर निवासी-कोलकाता प्रवासी

भ्रमणध्वनि: ९८३००८०२३०

फाउंडेशन के माध्यम से 'भारत को 'भारत' ही बोला जाए, INDIA नहीं अभियान बहुत ही उत्तम है और यह प्रयास अवश्य सफल होगा, इस अभियान का मैं पूरा समर्थन करता हूं।

बंगाल एनर्जी लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर ओम जालान जी राजस्थान स्थित 'राजलदेसर' के निवासी हैं, आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, उच्च शिक्षा आपने कोलकाता से ग्रहण की है। वर्तमान में उद्योग के साथ आप कई सामाजिक संगठनों में भी जुड़े हुए हैं। कोलकाता पिंजरापोल समिति व महाराजा अग्रसेन धाम कोलकाता के चेयरमैन के रूप में कार्यरत हैं, कई गौशालाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

रूबी टोंग्या

व्यवसायी व समाजसेवी

कोलकाता निवासी

भ्रमणध्वनि: ९००७९१३६६३

जैन एकता के संदर्भ में रुबी जी का कहना है कि जैन समाज अपनी संस्कृति, संस्कार, अहिंसा और मानवता के लिए विश्वभर में सम्मानित है, लेकिन आज हमारा समाज अनेक परंपराओं और संगठनों में बंटा हुआ दिखाई देता है। हमारी पहचान अलग-अलग संप्रदायों से पहले 'जैन' के रूप में होनी चाहिए। यदि हम एकजुट होंगे तो हमारी सामाजिक, शैक्षणिक और धार्मिक आवाज़ अधिक मजबूत होगी, हम अपने युवाओं के लिए बेहतर अवसर बना पाएंगे और समाज के हित में बड़े स्तर पर कार्य कर सकेंगे।

'जैन एकता' तभी संभव है जब हम मतभेद नहीं, बल्कि समानताओं पर ध्यान दें, एक-दूसरे का सम्मान करें, संयुक्त कार्यक्रम आयोजित करें, युवाओं को साथ जोड़ें और सेवा को अपना साझा उद्देश्य बनाएँ, हमारा मंत्र हो पहले हम जैन हैं, फिर किसी पंथ से हैं।

मेरा मानना है कि आज का युवा धर्म से दूर नहीं हुआ है, बल्कि उन्हे धर्म को समझाने का तरीका बदलने की आवश्यकता है। आज की पीढ़ी तर्क, प्रेरणा और व्यवहारिक जीवन से जुड़ना चाहती है।

यदि हम उन्हें जैन धर्म के सिद्धांत - अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और करुणा को आधुनिक जीवन से जोड़कर समझाएँ, उन्हें समाज सेवा में भाग लेने का अवसर दें और उन्हें सम्मानपूर्वक जिम्मेदारियाँ सौंपें, तो वे निश्चित रूप से समाज और धर्म से जुड़ें रहेंगे।

युवा हमारे समाज का भविष्य हैं, उन्हें केवल उपदेश नहीं, बल्कि अवसर और विश्वास देने की आवश्यकता है।

मेरे लिए 'भारत' केवल एक नाम नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता, संस्कृति, इतिहास और आत्मसम्मान का प्रतीक है। 'भारत' नाम हमारी जड़ों और हमारी पहचान से जुड़ा हुआ है।

मेरा मानना है कि हमें अपने देश को गर्व के साथ 'भारत' कहना चाहिए, क्योंकि यही हमारे राष्ट्र का मूल और ऐतिहासिक नाम है, जब हम 'भारत' कहते हैं, तो हम अपनी संस्कृति, परंपरा और विरासत का सम्मान करते हैं। साथ ही सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने देश के प्रति कर्तव्य निभाएँ, ईमानदारी से कार्य करें और भारत को विश्व में और अधिक गौरवान्वित करवाएं।

मेरा नाम रूबी जैन है, मैं कोलकाता, पश्चिम बंगाल की निवासी हूँ। मैं समाज सेवा के कार्यों से जुड़ी हुई हूँ और 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' की सक्रिय सदस्य हूँ।

मेरा उद्देश्य समाज को जोड़ना, मानव सेवा को बढ़ावा देना और जरूरतमंद लोगों की सहायता करना है। मैं विशेष रूप से रक्तदान जागरूकता, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और सामाजिक सहयोग जैसे कार्यों में अपनी सहभागिता निभाती हूँ।

मेरा विश्वास है कि किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसकी एकता, सेवा भावना और संस्कारों में होती है, मैं अपने कार्यों के माध्यम से समाज और राष्ट्र के विकास में निरंतर योगदान देने का प्रयास करती हूँ। जय भारत! जय गौमाता!

-मैं भारत हूँ

गो-सेवक परिवार आपके प्रेम से सिंचित है। गौ माता बनें राष्ट्रमाता अभियान के समर्थन का निवेदन

रांची के प्रमुख स्कूल और कॉलेज

सरला बिरला पब्लिक स्कूल

'रांची' झारखंड में स्थित एक प्रमुख सह-शिक्षा विद्यालय है. यह स्कूल अपनी उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था, आधुनिक बुनियादी ढांचे और विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए जाना जाता है। यह स्कूल सीबीएसई बोर्ड से संबद्ध है और यहाँ नर्सरी से लेकर कक्षा १२वीं तक की पढ़ाई होती है।

सरला बिरला पब्लिक स्कूल

श्री शिवनारायण मारवाड़ी कन्या विद्यालय

मारवाड़ी कॉलेज

श्री शिवनारायण मारवाड़ी कन्या विद्यालय

श्री शिवनारायण मारवाड़ी कन्या विद्यालय (गांधी चौक, अपर बाजार, रांची) की स्थापना लगभग ९० वर्ष पूर्व हुई थी। यह शहर के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित बालिका विद्यालयों में से एक है। इस विद्यालय की नींव क्षेत्र में महिला शिक्षा को बढ़ावा देने और बालिकाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से रखी गई थी। अप्रैल २०२४ में इस विद्यालय ने अपनी स्थापना के ९० वर्ष पूरे होने का जश्न (अमृत महोत्सव) मनाया।

मारवाड़ी कॉलेज

इसकी स्थापना वर्ष १९६३ में मारवाड़ी शिक्षा ट्रस्ट द्वारा समाज के पिछड़े और जनजातीय वर्गों के छात्रों को उच्च शिक्षा देने के उद्देश्य से की गई थी।

मान्यता: यह रांची विश्वविद्यालय से संबद्ध एक स्वायत्त कॉलेज है। यह रांची के हिंदपिढ़ी इलाके में, स्वामी विवेकानंद सरोवर (बड़ा तालाब), लेक रोड के समीप स्थित है।

रांची के अस्पताल

नगरमल मोदी अस्पताल

नगरमल मोदी को मुख्य रूप से नगरमल मोदी सेवा सदन के नाम से जाना जाता है, यह रांची के सबसे पुराने, प्रतिष्ठित और किफायती धर्मार्थ अस्पतालों में से एक है। नागरमल मोदी सेवा सदन अस्पताल की स्थापना वर्ष १९५८ में शुरू हुयी थी। २०० से अधिक बेड की क्षमता वाला एक मल्टी-स्पेशलिटी अस्पताल है, जहां निम्नलिखित चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध है। सामान्य चिकित्सा और सर्जरी हृदय रोग विभाग अस्थि रोग विभाग स्त्री एवं प्रसूति रोग और बाल रोग विभाग पैथोलॉजी लैब, एक्स-रे, सोनोग्राफी और स्वयं का ब्लड बैंक, आयुष्मान भारत कार्ड के तहत भी मरीजों का इलाज किया जाता है।

केंद्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान

नगरमल मोदी अस्पताल

रिम्स अस्पताल

रिम्स अस्पताल

रिम्स रांची और पूरे झारखंड का सबसे बड़ा और प्रमुख स्वायत्त सरकारी मेडिकल संस्थान और अस्पताल है, स्थापना वर्ष १९६० में राजेंद्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल के रूप में हुई थी, जिसे बाद में २००२ में अपग्रेड करके 'रिम्स' का नाम दिया गया। यह २१७० बेड वाला एक विशाल मल्टी-स्पेशलिटी अस्पताल है। यहाँ मरीजों को सरकारी योजनाओं के तहत मुफ्त इलाज और जरूरी दवाइयां प्रदान की जाती हैं।

सदर अस्पताल

रांची के केंद्र में स्थित एक प्रमुख राज्य सरकारी जिला अस्पताल है। आम जनता और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को बेहद कम खर्च या मुफ्त चिकित्सा सुविधाएं और दवाइयां उपलब्ध कराने में इस अस्पताल की बहुत बड़ी भूमिका है। वर्तमान में यह अस्पताल एक विशाल ५०० बेड की क्षमता वाली बहुमंजिला आधुनिक इमारत में संचालित है। अस्पताल में गंभीर मरीजों के लिए ICU, ICCU, NICU और आधुनिक ऑपरेशन थिएटर उपलब्ध हैं। प्राथमिक उपचार, ओपीडी परामर्श और सरकारी योजनाओं के तहत अधिकांश जेनेरिक दवाइयां और टेस्ट बिल्कुल फ्री उपलब्ध हैं।

केंद्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान

केंद्रीय मनश्चिकित्सा संस्थान रांची के कांके में स्थित भारत सरकार (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय) का एक अत्यंत प्रतिष्ठित और ऐतिहासिक मानसिक स्वास्थ्य संस्थान है, १७ मई १९१८ को ब्रिटिश काल में स्थापित यह संस्थान पूरे एशिया में मानसिक रोगों के इलाज, शोध और ट्रेनिंग के लिए सबसे प्रमुख केंद्रों में से एक माना जाता है। पारंपरिक 'पागलखानों' के विपरीत, हमेशा से एक खुला अस्पताल रहा है। यहाँ मरीजों को कमरों में बंद नहीं रखा जाता, बल्कि २११ एकड़ के विशाल और हरे-भरे परिसर में आज़ादी से घूम सकते हैं।

मणिपाल हॉस्पिटल्स

रांची स्थित भगवान महावीर मणिपाल अस्पताल (बीएमएमएच) व्यापक हृदय रोग देखभाल प्रदान करने और सामान्य एवं जटिल दोनों प्रकार की बीमारियों के प्रबंधन के लिए प्रसिद्ध है। सटीक निदान और उपचार के लिए अस्पताल में कैथ लैब, कार्डियक सीटी, एमआरआई और ३डी इकोकार्डियोग्राफी जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। हृदय रोग विशेषज्ञों और हृदय शल्य चिकित्सकों की एक कुशल टीम एंजाइना, अतालता, हृदय विफलता और वाल्व संबंधी रोगों के लिए विशेष देखभाल प्रदान करती है।

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

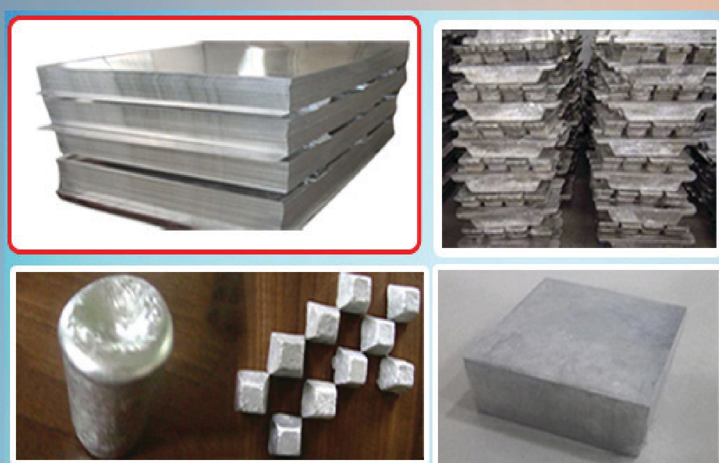

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

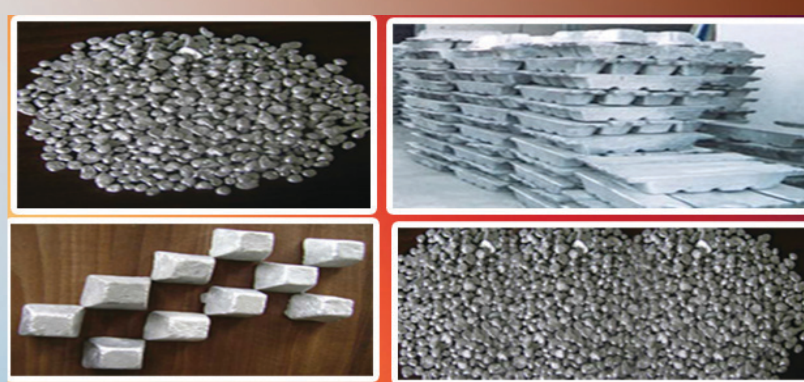

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road,
Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

Postal Registration Number - MCN/294/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-354/North/2024-26
Published on 19th July 2026 & Posting on 20th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059.

भारत को 'भारत' ही बोलें इंडिया नहीं पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

राष्ट्रमाता बनें
निवेदकः मैं भारत हूँ फाउंडेशन

१६ वें वर्ष में प्रवेश

मैं भारत हूँ

भारतीय सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक भावना को प्रेरित करती पत्रिका

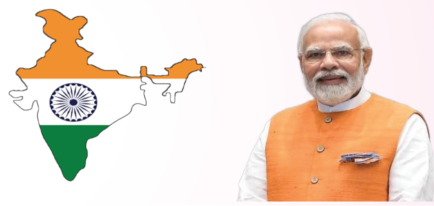

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

अभी तक भारत के शहरों के इतिहास बताते हुए प्रकाशित विशेषांक...

विशेष छूट
विज्ञापन प्रकाशन करने पर
पूरे साल
मैं भारत हूँ
पत्रिका मुफ्त

भारत का इतिहास पहुँचाए आपके हाथ

आप चाहें तो प्रस्तुत विशेषांक
आपके घर-कार्यालय की
शोभा व ज्ञान बढ़ाने के लिए मंगवा सकते हैं

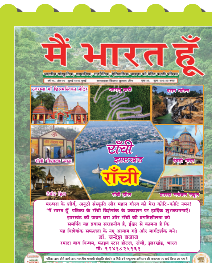

आपके हाथों में

विशेषांक मंगवाने के लिए संपर्क करें
(समय १ दोपहर से संध्या ५.०० बजे तक)

ज्योति
9820873689

मात्र ₹ १२००/-में
प्रति महिना, पूरे वर्ष तक
(आपके द्वार)

सम्पादक
बिजय कुमार जैन

उपसम्पादक
संतोष जैन 'विमल'

कार्यकारी सम्पादक
अनुपमा शर्मा (दाधीच)

भारतीय भाषा अपनाओ अभियान भारत की बनें राष्ट्रभाषा ये है हमारा आव्हान
Remove India Name From the Constitution

नीम लगायें पर्यावरण बचाये
India को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059 से मुद्रित करवा कर बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत- 400 059 से प्रकाशित किया गया, टेलीफैक्स-०२२-४०१५८०९४, अणुडाक-mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना - www.mainbharathun.co.in,
द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI No. MAHHIN/2010/48574